वर्ष 45 अंक: 2-3 24.6.2022 शुक्रवार (मार्च-जून) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

साधु पर्व 2022
दिसंबर 23-24-25
मरज़ी में तेरी मिट जाएँ

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

1 जून, सायं – अनुष्ठान शिविर का शुभारंभ...

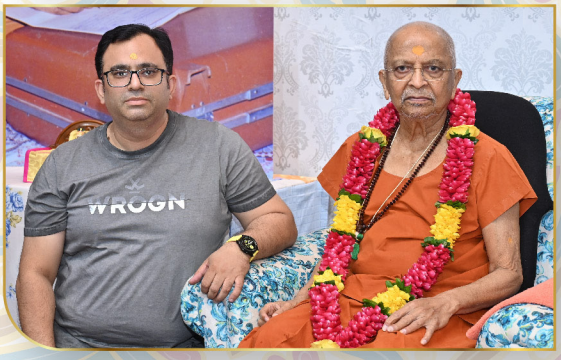

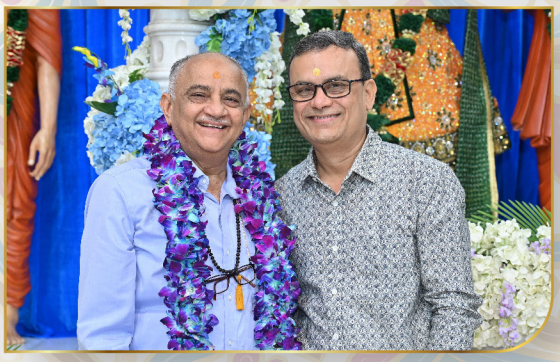

काकाजी की मूर्ति याद करके जितनी सेवा, भजन, सत्संग करेंगे व मिलजुल कर रहेंगे, तो लाभ मिलता जायेगा... —प.पू. गुरुजी

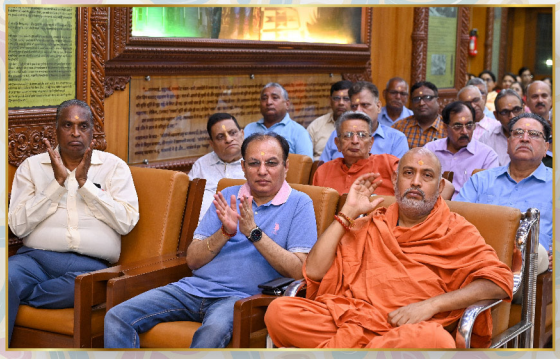

हमें मन का नहीं, बापा का होकर जीना है...

—प.पू. गुरुजी

काकाजी के सिद्धांत से जीते, दिल्ली मंडल की कुटुंबभावना सभी स्वरूप याद करते हैं...

—प.पू. वशीभाई

12 जून के 'आम रस प्रसाद' की पूर्व तैयारियाँ...

12 जून, सायं

गुरुहरि काकाजी महाराज का 105 वाँ प्राकट्योत्सव एवं अनुष्ठान शिविर की पूर्णाहुति...

स्वामिनारायण का जग में गूंजे नारा, ताड़देव तीरथ न्यारा...

13 जून, सायं – प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्य पर्व...

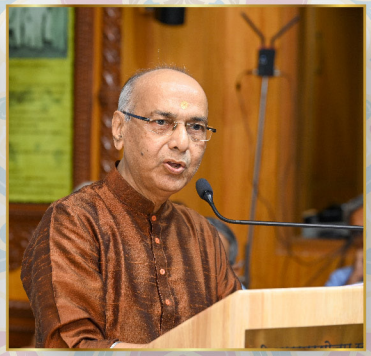

1 से 12 जून–अनुष्ठान शिविर 2022 एवं 13 जून प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्योत्सव...

कोरोना के कारण 2020 और 2021, दो साल मंदिर में अनुष्ठान शिविर नहीं हो पाई। इंटरनेट के माध्यम से पूर्व वर्ष के अनुष्ठान शिविर का सबने घर बैठे लाभ लिया। सो, इस बार जब शिविर का आयोजन करने हेतु **प.पू. गुरुजी** से पूछा, तो उन्होंने सहजता से कहा–

दो साल के बाद यह शिविर हो रही है, तो एक महीना न रख कर 1 जून से 12 जून तक रखो।

तब तो प.पू. गुरुजी की एन्ज्योप्लास्टी का किसी को भी अंदाजा नहीं था। देखा जाये तो उन्होंने संकेत दिया, पर उनकी सहजता में छुपे रहस्य को हम समझ नहीं पाये। प.पू. गुरुजी को कोटि-कोटि धन्यवाद कि हमारी आंतरिक बैटरी रीचार्ज करने के लिये उन्होंने अपने स्वास्थ्य को अहमियत नहीं दी। इसी प्रकार, **प.पू. वशीभाई** जो कि अप्रैल महीने में तो आये ही थे, पर अनुष्ठान शिविर की मंगल शुरुआत में ही अपने दर्शन और समागम का लाभ देने **प.पू. राजुभाई ठक्कर, प.पू. अश्विनभाई, पू. घनश्यामभाई अमीन** और **पू. आनंद भगत** के साथ वे 31 मई की रात को मंदिर आ गये।

1 जून–गुरुहरि पप्पाजी के दृष्टा दिन, गुणातीत समाज एवं गुणातीत ज्योत की स्थापना के शुभ दिन सायं सात बजे सभी **कल्पवृक्ष हॉल** में एकत्र हुए। श्री ठाकुरजी के सिंहासन पर नीले और क्रीम रंग के फूलों से सुशोभन किया था। इस बार **गुरुहरि काकाजी महाराज के पत्रों के संकलन की पुस्तक 'ब्रह्मप्रवाह'** की पारायण होनी थी, सो प.पू. गुरुजी के सोफे की पृष्ठभूमि पर गुरुहरि काकाजी महाराज की एक निराली मूर्ति लगाई थी, जिसमें वे अपने कपड़ों की अटैची पर ही रख कर पत्रलेखन कर रहे थे। मूर्ति के पास उनके द्वारा लिखित असली (वास्तविक) दस पत्रों को लकड़ी के फ्रेम्स में लगाया था। प.पू. गुरुजी, प.पू. वशीभाई के साथ जब वहाँ आये, तो मूर्ति को नमन किया, खूब बारीकी से सुशोभन निहारा और गुरुहरि काकाजी के पत्रों को पढ़ने की चेष्टा की।

तत्पश्चात् 'स्वामिनारायण महिमा स्तवन' और फिर 'धुन' से शिविर की मंगल शुरुआत हुई। धुन समाप्त होने के बाद ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी

की आज्ञानुसार श्रीजी महाराज के वचन—'बोले श्री हरि रे...' का श्रवण किया। **प.पू. गुरुजी, प.पू. वशीभाई, पू. सुहृदस्वामी, पू. घनश्यामभाई अमीन** और **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** द्वारा दीप प्रज्वलन से अनुष्ठान शिविर का शुभारंभ हुआ। गुरुहरि पप्पाजी के दृष्टा दिन की स्मृति करते हुए, उनकी प्रसादी का हार **प.पू. गुरुजी** को **पू. अमित जोशीजी** ने अर्पण किया। **पू. परेशभाई महेता** ने **प.पू. वशीभाई** को स्वागत हार अर्पित किया। **पू. घनश्यामभाई अमीन** की शादी की **50वीं** वर्षगाँठ थी, सो प.पू. वशीभाई की प्रसादी की हार **पू. सुहृदस्वामीजी** ने उन्हें पहनाया और **प.पू. गुरुजी** ने स्मृति भेंट दी।

तदोपंरात **पू. घनश्यामभाई अमीन** ने व्यासपीठ पर बैठे **पू. आनंदस्वामी** का पूजन करके उन्हें हार अर्पण किया। पू. आनंदस्वामी ने ब्रह्मप्रवाह का एक पत्र पढ़ा, जिसका निरूपण करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया—

...काकाजी की आज्ञा का पालन सहज रूप से जितना करेंगे, इतने उनके आशीर्वाद हम सहज रूप से आत्मसात् कर पायेंगे और हमारे प्रारब्ध व प्रकृति का रूपांतर होगा... अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के साथ काकाजी की मूर्ति को याद करके, जितनी सेवा, भजन, सत्संग करेंगे और हरिभक्तों से मिलजुल जायेंगे, तो लाभ मिलता जायेगा... ***संपूर्ण विश्वास रखेंगे, तो ब्राह्मीस्थिति हो जायेगी... श्रद्धा टूटने नहीं देना और हमें मन का नहीं, बापा का होकर जीना है... ब्रह्मानंद करते रहो; वह तभी उत्पन्न होगा, जब प्रत्येक क्रिया भगवान संबंधी करते रहेंगे...*** *बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी को केन्द्र में रख कर जितना जीवन जीते रहेंगे, क्रियायोग-प्रवृत्ति करते रहेंगे, वो हमें ब्रह्मभाव की ओर अग्रसर करती रहेगी...*

तत्पश्चात् **प.पू. वशीभाई** ने प.पू. गुरुजी का स्वास्थ्य संभालने वाले सेवकों-डॉक्टर्स को धन्यवाद देते हुए आशीष वर्षा की—

...महापूजा में हम रोज़ प्रार्थना करते हैं कि गुरुजी की तबियत खूब अच्छी रहे और अच्छे स्वास्थ्य से हम सबको आनंद कराते रहें, लाभ देते रहें, एकांतिक धर्म सिद्ध कराते रहें और काकाजी का जो कार्य वे कर रहे हैं, वो जारी रहे... ***साहेबदादा, दिनकरभाई, भरतभाई सभी स्वरूप काकाजी के सिद्धांत से जीते दिल्ली मंडल की कुटुंबभावना को याद करते हैं। हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि काकाजी ने दिल्ली में गुरुजी की भेंट दी है... भक्तों की सेवा करने का भाव जो गुरुजी ने खुद जीकर, भजन***

करा के, डाँट कर आपके अंदर डाला है, वो सच आध्यात्मिकता में भी बेमिसाल है... काकाजी ने गुणातीत समाज की स्थापना ऐसे ही नहीं कर दी। उनकी हृदयभावना थी कि उनके द्वारा स्थापित सभी केन्द्र गुणातीत भावना प्राप्त करके ऐसा समाज बनायें...

गुणातीत भावना बहुत बड़ी चीज़ है। ***संबंधी के आगे झुक जाना कि तुम सही, मैं ग़लत। ऐसा कह कर अपना स्व छोड़ देना... यह अक्षरधाम का भाव है...***

हम कितने नसीबदार हैं कि यहाँ बैठे हैं और गुरुजी के दर्शन-भजन का लाभ लेते हैं... गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बात में कहा है कि कथा, कीर्तन, शिविर, समागम कुछ न कुछ जारी रहना चाहिये, जिससे हमारे अंदर उत्पन्न होते नकारात्मक विचार, आलस टल जाते हैं...

उत्सवों-शिविरों में की जाती सेवा हमारे इंद्रियों-अंतःकरण, मन, बुद्धि, चित्त को भक्तिमय-सकारात्मक बनाती है...

काकाजी ने एकांतिक धर्म सिद्ध करने और आध्यात्मिक क्षितिज प्राप्त करने की बात की। इससे भी अधिक जीवन में कोई भी प्रसंग आये, तब ***निष्ठा व भगवान का बल लेकर जीने की जीवनशैली काकाजी जो गुरुजी को सिखा कर गये हैं, वो कहीं नहीं मिलेगी।*** *बहुत अच्छी मेनेजमेन्ट मिलेगी, एड्मिनिस्ट्रेशन मिलेगा, लेकिन भगवान के बल से, भगवान में निमग्न रह कर उन्हें प्रगट करना अलग बात है... गुरुजी ने हमारे जीवन में जो भी किया है, वो एक पल भी न भूलें। सभी स्वरूपों को हम याद करते ही रहें। हम ग़फ़लत और आलस में न रहें, किसी भी नकारात्मक सोच में न रहें, बस आपकी ओर दृष्टि रख कर आनंद और सहजता से करते रहें...*

अंत में **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** के प्रासंगिक उद्बोधन से शिविर के प्रथम दिन का समापन हुआ। शिविर के दूसरे दिन निरूपण करते हुए **प.पू. वशीभाई** ने आशीर्वाद दिया और **3 जून** की सुबह वे मुंबई लौट गये।

12 जून तक रोज़ धुन-भजन के बाद, प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी महाराज के पत्रों का निरूपण किया। एक दिन **पू. राजुभाई ठक्कर** ने निरूपण किया। **सत्संग के छोटे बच्चों** ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की तीन बातों का हिन्दी में बारी-बारी से रोज़ पठन किया। **संतों, युवकों** और **हरिभक्तों** ने भी प्रतिदिन माहात्म्य दर्शन कराया।

पूर्णाहुति के दिन **श्री ठाकुरजी के समक्ष ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी द्वारा घोषित—आत्मीयता की गंगोत्री 'ताड़देव' के हॉल की प्रतिकृति बनाई थी।** सभी की भावना व्यक्त करते हुए **काकाजीस्वरूप प.पू. गुरुजी** को **गुरुहरि काकाजी महाराज** की प्रसादी का हार, **पू. आर.पी. गुप्ताजी** एवं मुंबई के **पू. डॉ. केयुर अध्वर्यु** ने मिल कर अर्पण किया। **श्रीजी महाराज** को अति प्रिय **मोगरा** के पुष्पों का हार मंदिर के **सेवक पू. ओमप्रकाशजी** ने स्वयं बना कर प.पू. गुरुजी को अर्पण किया। अपनी प्रसन्नता बरसाते हुए प्रसादी का यह हार, **प.पू. गुरुजी** ने भक्ति की सुवास फैलातीं **प.पू. दीदी** के लिये भिजवाया। **पू. शोभना भाभी** ने उन्हें वह अर्पण किया।

वर्ष 2016 में **ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज** के अंतर्धान होने के बाद, मंदिर के स्टाफ को संबोधित एक पत्र में प.पू. गुरुजी ने **'अक्षरपुरुषोत्तम उपासना'** के विषय में लिखा था। उसका थोड़ा निरूपण प.पू. गुरुजी ने किया। **पू. पुनीत गोयलजी** एवं **पू. विपिन यादव** ने हाल ही में हुई प.पू. गुरुजी की एनज्योप्लास्टी का विवरण करते हुए, सभी का अंतर्मन द्रवित कर दिया कि प.पू. गुरुजी को भक्तों से कितना प्रेम-लगाव है और हमें उनके रूप में सहजता से क्या प्राप्ति हुई है! गुरुहरि काकाजी की स्मृति करते हुए सभी ने आमरस का प्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

13 जून को स्कूल सर्टीफीकेट के मुताबिक **प.पू. गुरुजी** का **त्रैमासिक प्राकट्य दिन** था। इस उपलक्ष्य में कल्पवृक्ष हॉल में सभा का आयोजन था। जगरांव के **पू. गगन खन्नाजी** व अमदावाद के **पू. हरेशभाई दोशी** ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। **पू. बलराम गुप्ताजी** ने मोगरे के हारों द्वारा श्री ठाकुरजी एवं प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी भावना अर्पित की। **पू. रमेश त्रिवेदीजी** ने अपने शायराना अंदाज़ में माहात्म्यगान किया। **पू. मयंक चावला** ने अंतर्दृष्टि के प्रसंगों से प्रार्थना की और **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** ने कविता के रूप में **'धुन-प्रार्थना'** की महिमा समझाई। सभा के अंत में **पू. पंकज रियाजजी** द्वारा प्रायोजित केक का प्रसाद प.पू. गुरुजी को अर्पण किया गया। विसर्जन प्रार्थना के बाद **पू. बलराम गुप्ताजी** द्वारा आयोजित प्रसाद सभी ने लिया। यूँ, अनुष्ठान शिविर की दिव्य स्मृतियों व आध्यात्मिक भोजन से मुक्तों ने अपनी आत्मा को तृप्त किया।

कल्याण के अधिकारी बने...

डॉ. अजय गोयलजी

डॉ. साहनी

डॉ. तपेश बंसलजी

डॉ. प्रवीण चंद्रजी

डॉ. कैलाश सिंहजी

अस्पताल पहुँचे दर्शनाभिलाषी...

विपिन, सारी गाड़ियों को पीछे छोड़ कर जल्दी से मंदिर पहुँचा दे... —प.पू. गुरुजी

तुमने पुकारा और हम चले आये, दिल हथेली पर ले आये...

'कल्पवृक्ष' हॉल में एन्ज्योप्लास्टी का विवरण...

हमारी चित्तशुद्धि के लिये, गुरुजी फिर निज हृदय संग खेले...

गुरुहरि काकाजी के मूलभूत सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए, प.पू. गुरुजी मंदिर में तो अपनी मूर्ति रखने के लिये कभी भी राज़ी नहीं होते। उनकी लाइफसाइज़ कटआउट वाली मूर्ति बहनों के आश्रम **'अक्षरज्योति'** के प्रार्थना हॉल **'नैमिषारण्य'** में सोफे पर पधराई है, जो वहाँ आने वाले सभी को लाइव और मनभावन लगती है।

सो, सेवक **पू. आशिष शाह** को विचार आया कि मिट्टी (क्ले) से प.पू. गुरुजी की मूर्ति का मॉडल बनवा कर, फिर फाईबर की मूर्ति अक्षरज्योति में पधराई जाये। इस बात पर प.पू. गुरुजी राज़ी हो गये। सो, जयपुर से बुलाये गये **मॉडल आर्टिस्ट श्री अर्जुन वाजपेयीजी** ने **18 अप्रैल** को **'जेतलपुर'** कॅबिन में मॉडल बनाने की शुरुआत की। मंदिर के संतों, युवकों, बहनों और हरिभक्तों ने धुन करते हुए मिट्टी लगा कर इस शुभ कार्य में अपनी भावना अर्पित की।

प.पू. गुरुजी को फरवरी महीने से कई बार रात को सोते समय सीने में भारीपन महसूस होने की और रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) बढ़ने की शिकायत रहती थी। इसका कारण शायद पेट में गैस बनना हो, ऐसे अनुमान से पू. पुनीत गोयलजी के 'कज़िन' भाई **डॉ. अजय गोयलजी** (गेस्ट्रोएन्टेरोलॉजीस्ट) को मंदिर बुला कर जाँच करवाई। उन्होंने सलाह दी कि यह गैस के कारण नहीं होता लगता, तो एक बार प.पू. गुरुजी हार्ट का चॅकअप करा लें। पहले कॉर्डियोलॉजिस्ट **डॉ. चान्ना** को दिखाया, तो उन्होंने कुछ दवाइयाँ बदलीं, पर शिकायत जारी रही। अतः मंदिर के आत्मीय **डॉ. तपेश बंसलजी** की सलाह पर **6 अप्रैल 2022** को गंगाराम अस्तपाल के कॉर्डियोलॉजिस्ट **डॉ. साहनीजी** को पंजाबी बाग में उनके क्लीनिक पर दिखाने गये। उन्होंने पंद्रह दिन दवाइयाँ लेने को कहा और यदि इस बीच फिर ऐसी शिकायत हो, तो इसके लिये विशेष टेस्ट कराने को कहा।

इसी दौरान प.पू. गुरुजी ने पू. आशिष द्वारा वाट्सएप पर **संतभगवंत साहेबजी एवं प.पू. हंसा दीदी को दिखाने के लिये मॉडल का फोटोग्राफ भिजवाया** और क्ले मॉडल को देखने के लिये सभी केन्द्रों के जानकार प्रतिनिधियों को बुलाने के लिये कहा, ताकि सभी निष्णात प्रतिनिधियों के परामर्श और सुहृदभाव से मॉडल में कोई कमी न रहे। इससे प.पू. गुरुजी ने दर्शन कराया कि गुणातीत समाज को उन्होंने तहेदिल से अपना कुटुंब माना है। सभी ने 27 अप्रैल को दिल्ली आने का निर्णय लिया।

सीने में भारीपन की तकलीफ जारी रहने के कारण, **26 अप्रैल** को प.पू. गुरुजी गंगाराम अस्पताल में टेस्ट कराने गये। वहाँ दो टेस्ट करने के बाद **डॉ. साहनीजी** ने प.पू. गुरुजी के साथ गये **डॉ. दिव्यांग** से कहा कि जितनी जल्दी हो सके, प.पू. गुरुजी की एन्ज्योग्राफी कराई जाये। प.पू. गुरुजी दिल्ली मंदिर एवं यहाँ से जुड़े मुक्तों की आत्मा हैं, सो उसी रात निजी हरिभक्त समुदाय चिदाकाश हॉल में एकत्र हुआ। करीब तीन घंटे विचार-विमर्श करने के बाद तय हुआ कि फोर्टीस एस्कॉर्ट के कॉर्डियोलॉजिस्ट **डॉ. अशोक सेठजी** या गुरुग्राम के मेदान्ता अस्पताल के कॉर्डियोलॉजिस्ट **डॉ. प्रवीण चंद्रजी** द्वारा प.पू. गुरुजी की एन्ज्योग्राफी कराई जाये।

अगले दिन **27 अप्रैल** की सुबह पता चला कि डॉ. अशोक सेठ तो चार-पाँच दिन के लिये बाहर गये हैं। डॉ. साहनी के कहे अनुसार ज्यादा दिन इंतज़ार नहीं कर सकते थे, सो तुरंत ही गुरुग्राम रहते **पू. देवांग संघवीजी** की धर्मपत्नी **सौ. अनुराधा भाभी** ने मेदान्ता अस्पताल में अपनी जान-पहचान के **डॉ. तुषारभाई** से प.पू. गुरुजी के लिये रूम एरेन्ज कराया। **संतभगवंत साहेबजी** की आज्ञा से अनुपम मिशन के आत्मीय मुंबई निवासी **पू. जगतभाई किल्लावाला** ने भी अपनी पहचान से मेदान्ता अस्पताल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक **डॉ. नरेश त्रेहानजी** के सचिव से बात की। साथ ही **डॉ. साहनीजी** ने **डॉ. प्रवीण चंद्रजी** से स्वयं बात की कि आप खुद प.पू. गुरुजी की एन्ज्योग्राफी करना। यूँ, डॉ. प्रवीण चंद्रजी को प.पू. गुरुजी ने कल्याण का अधिकारी बनाने के लिये चुना।

प.पू. गुरुजी जब मुक्तों के विषय में भीत के पार देख सकते हैं, तो इस क्षण के बारे में स्वयं उन्हें तो ख्याल होगा ही। इसीलिये मॉडल दिखाने के ज़रिये उन्होंने गुणातीत समाज के मुक्तों को इस समय बुला लिया। 27 अप्रैल की दोपहर ढाई बजे कंथारिया से **पू. विज्ञानस्वामीजी** अपनी जोड़ के साधु **पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी** व सेवक **आदित्य पटेल** के साथ मंदिर पहुँचे। तब प.पू. गुरुजी भोजन ग्रहण कर रहे थे। प.पू. गुरुजी का दर्शन करते हुए पू. विज्ञानस्वामीजी खूब स्तब्ध व भावविभोर लग रहे थे।

सायं चार बजे के करीब प.पू. गुरुजी मेदान्ता अस्पताल के लिये रवाना हुए। मुक्तों के अंतर का रुदन सुन कर **प.पू. गुरुजी** ने कहा— ***कल तक मैं लौट आऊँगा।***

मेदान्ता अस्पताल पहुँच कर छः बजे तक कमरे में सेटल हुए। इसी दौरान अनुपम मिशन से **संतभगवंत साहेबजी** की आज्ञा से प.पू. गुरुजी की मूर्ति का मॉडल देखने के लिये **पू. रमेशभाई झा** एवं प्रख्यात आर्टिस्ट **पू. कांतिभाई** दिल्ली मंदिर आ गये। मुंबई से **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई** और **पू. घनश्यामभाई**

मॉडल देखने का प्लान करके आये थे, वे रात को करीब आठ बजे एयरपोर्ट उतरे और वहाँ से सीधा प.पू. गुरुजी का दर्शन करने मेदान्ता गये। धुन करके रात को ग्यारह बजे मंदिर आये।

अगले दिन सुबह दस बजे के बाद प.पू. गुरुजी की एन्ज्योग्राफी होनी थी। तब विडियो कॉल पर बात करके **संतभगवंत साहेबजी** ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपना प्रेम व्यक्त किया। **प.पू. हंसा दीदी** ने भी सेवक अभिषेक से बात करके अपनत्व का एहसास कराया। मंदिर के कल्पवृक्ष हॉल में सुबह दस बजे से कई हरिभक्त **प.पू. भरतभाई-प.पू. वशीभाई** की निश्रा में धुन करने आये और जो न आ सके उन्होंने घर पर बैठ कर भजन किया। प.पू. हंसा दीदी की आज्ञा से गुणातीत ज्योत में भी धुन हुई। वॉट्सएप के 'अवर टेम्पल अपडेट्स' ग्रुप पर हरिभक्तों को समय-समय पर प.पू. गुरुजी के बारे में सूचित किया गया। दोपहर बारह बजे एन्ज्योग्राफी शुरू हुई। **डॉ. तुषारभाई** के साथ **डॉ. दिव्यांग** भी वहीं मौजूद रहे। एन्ज्योग्राफी से पता चला कि प.पू. गुरुजी की तीन हृदय धमनियाँ (आर्टरीज़) ब्लाक हैं। तभी **डॉ. प्रवीण चंद्रजी** ने एन्ज्योप्लास्टी करने का निर्णय लिया। दोपहर ढाई बजे तक मॅसेज आ गया कि प.पू. गुरुजी की एन्ज्योप्लास्टी ठीक से हो गई है और तीन स्टन्ट्स डाले हैं। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी आई.सी.यू. में रहे। एन्ज्योप्लास्टी से लेकर आई.सी.यू. में आने तक प.पू. गुरुजी जाग्रत अवस्था में ही थे। आश्चर्य की बात हुई कि **भक्तों के अनुरागी प.पू. गुरुजी** ने रट लगा ली—

अब मैं ठीक हूँ, मुझे मंदिर जाना है।

इस हेतु रात को ही उन्होंने सेवक **पू. अभिषेक** से **डॉ. प्रवीण चंद्रजी** को फोन करवा कर पुछवाया कि वे कल मंदिर जा सकते हैं न!

दिल्ली मंदिर से खूब घनिष्ठता से जुड़े संतभगवंत साहेबजी के अनन्य भक्त **डॉ. कैलाश सिंहजी** प.पू. गुरुजी का दर्शन करने आये। उन्होंने बताया कि उनके बेटे **पू. मानस** ने मेडिकल की पढ़ाई पूरी कर ली है और याद किया—

बचपन में जब भी वह मंदिर आता, तो गुरुजी हमेशा उसे डेरी मिल्क की चॉकलेट देते।

रात को आई.सी.यू. में प.पू. गुरुजी की देखरेख में रहे सेवक **पू. विश्वास** ने बताया कि नींद में **प.पू. गुरुजी** कह रहे थे— *चॉकलेट, मानस को चॉकलेट देनी है।*

जाग्रत अवस्था में तो प.पू. गुरुजी भक्तों की सेवा के लिये तत्पर रहते ही हैं, लेकिन संबंध वाले भक्तों को राज़ी करने की कैसी झंखना कि ऐसी तबियत और सुषुप्तावस्था में भी याद कर रहे थे। प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य की

निगरानी रखने हेतु **डॉ. तपेश** पूरी रात जागे।

29 अप्रैल की सुबह से प.पू. गुरुजी के डिस्चार्ज की सारी कार्यवाही शुरू हो गई। **प.पू. गुरुजी** को भक्तों के बीच पहुँचने की कैसी ललक होगी कि उन्होंने कहा—

डिस्चार्ज की औपचारिकता तो दो-तीन जने पूरी कर देंगे, मुझे तो जल्दी छुट्टी दे दो।

उनके इस जॅस्चर्स से ऐसा लगता कि मानो उड़ कर वे मंदिर पहुँच जायें। सहज ही **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** की प्रकरण एक की 197वीं बात याद आती है—

हम मानते हैं कि हमें भगवान से लगाव है, परंतु हमसे कई गुणा अधिक लगाव तो भगवान व संत को हमसे है।

पू. विपिन यादव की पहचान से मेदान्ता के प्रशासनिक प्रमुख **श्री सहगल साहेब** ने डिस्चार्ज की प्रक्रिया जल्दी पूरी करा दी और गाड़ी में बैठते ही **प.पू. गुरुजी** ने पू. विपिन से कहा—

सारी गाड़ियों को पीछे छोड़ कर जल्दी से मंदिर पहुँचा दे।

मंदिर में प.पू. गुरुजी के स्वागत के लिये फूलों का गलीचा बनाया था। प.पू. गुरुजी के दर्शनार्थ करीब दो सौ मुक्त एकत्र हुए थे। सायं चार बजे प.पू. गुरुजी की गाड़ी मंदिर पहुँची कि तभी **प.पू. गुरुजी** की आज्ञा से **पू. आशिष** ने मुक्तों के प्रति उनके उद्‌गार, गाने की निम्न पंक्ति बजा कर व्यक्त किये—

तुमने पुकारा और हम चले आये, दिल हथेली पर ले आये रे...

खुशी से नम आँखों से अपने प्राणाधार पुरुष का सभी ने स्वागत किया। भक्तों ने ऐसा सोचा था कि बस थोड़ी देर दूर से दर्शन करके सब अपने-अपने घर चले जायेंगे, लेकिन भक्तवत्सल प.पू. गुरुजी तो गाड़ी से उतर कर तुरंत हरिभक्तों के बीच आकर प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठ गये। प.पू. गुरुजी के लाड़ले 5 वर्षीय प्यारे **नमन** ने 'वॅलकम होम' करते हुए उन्हें कार्ड दिया। इससे भी ज्यादा हैरानी यह हुई कि अपनी तबियत के बारे में भक्तों की चिंता और दर्शन करने की उनकी लालसा को भाँप कर प.पू. गुरुजी ने सबको 'कल्पवृक्ष हॉल' में जाने के लिये कहा। फ्रेश होकर प.पू. गुरुजी तुरंत वहाँ आये और तकरीबन पौना घंटा बैठे रहे। **पू. डॉ. दिव्यांग** ने एन्ज्योग्राफी से लेकर एन्ज्योप्लास्टी तक की पूरी प्रक्रिया का विवरण दिया। बीच-बीच में अपना अनुभव बताते **प.पू. गुरुजी** ने कहा—

बायपास सर्जरी के समय मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हुई थी, लेकिन अभी एक आर्टरी में स्टन्ट डालते हुए बहुत ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ आ रही थी, जैसे कोई ठोक-ठोक कर रहा हो।

वाक़ई, प.पू. गुरुजी हम सबके लिये दिल हथेली पर ही लेकर आये हैं।

प.पू. गुरुजी भक्तों को दर्शन देने केवल यहीं तक सीमित नहीं रहे। नीचे चिदाकाश हॉल में जाकर आराम करने के बजाय स्नान करने गये और फिर पूजा में दर्शन दिये। उन्होंने तनिक भी एहसास ही नहीं होने दिया कि वे हृदय की गंभीर समस्या से गुज़रे हैं।

हम सभी के लिये यह खूब मननीय प्रसंग बना है, क्योंकि **गुरुहरि काकाजी महाराज ने हम पर खूब मेहर करी है कि डॉक्टर्स के कहे अनुसार ऐन वक़्त पर प.पू. गुरुजी की तकलीफ़ पकड़ी गई और उपचार हो गया।**

ब्रह्मप्रवाह के एक पत्र में **गुरुहरि काकाजी** ने लिखा है—

तत्त्वों का लाखों वर्ष का शुद्धिकरण महाराज करते हैं...

प.पू. गुरुजी को गुरुहरि काकाजी के आश्रित मुक्तों से कितना लगाव-प्रेम है कि उनका आंतरिक शुद्धिकरण करने के लिये पच्चीस साल पहले 60 वर्ष की आयु में हृदय की बीमारी ग्रहण की थी। तब मुंबई के **लीलावती अस्पताल** में **24 दिसंबर 1997** को स्वर्गीय **डॉ. नीतू मांडके** ने बायपास सर्जरी की। स्वस्थ होने के बाद, मुक्तों को लाड़ लड़ा कर, धुन-भजन, कथावार्ता से प.पू. गुरुजी ने प्रभु की मूर्ति का सुख दिया। बीते उन पलों की ओर नज़र करें, तो ख्याल आयेगा कि सभी ने भीतर से रो-रोकर, गुरुहरि काकाजी के कहे अनुसार नाभि का भजन करके श्रीजी महाराज से कैसी प्रार्थना करी।

समय तो मुट्ठी से रेत की भाँति फिसलता गया और प.पू. गुरुजी की निश्रा में ब्रह्मानंद करते हुए तो 25 वर्ष पलक झपकते ही बीत गये। पर, भीतर में टटोलें कि कहीं न कहीं हम गफ़लत में जी रहे थे, सो उस नशे में से हमें बाहर निकालने के लिये प्रभु ने फिर से जाग्रत किया। हमारे व्यक्त और अव्यक्त नकारात्मक विचारों को प.पू. गुरुजी ने अपनी देह पर इतना झेला है, तो अब हम सभी प्रकार की ग्रंथियाँ छोड़ कर, योगी परिवार के समग्र मुक्तों को अपना कुटुंबी मान कर, **संप, सुहृदभाव व एकता के सिद्धांत से जियें, ताकि उन्हें लंबे समय तक हमारे बीच रहने का मन हो।**

सभी मुक्तों से यही अपील-प्रार्थना है कि प.पू. गुरुजी के अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घायु के लिये निरंतर भजन करते रहें। मुख्यतः तो अपनी नकारात्मक सोच को तिलांजलि देकर, सबकी महिमा की सुवास फैलाने की सेवा करते रहें, ताकि प.पू. गुरुजी निरामय स्वास्थ्य से चिरकाल तक अपनी मूर्ति व आशीर्वाद का सुख देते रहें-देते रहें...

13 अप्रैल – पू. सुहृदस्वामीजी का भागवती दीक्षा दिन एवं सद्गुरु संत पू. मनोजदासजी का सत्कार समारोह...

मनोजभाई, आपके पास जो भी आये, तो कंजूसी रखे बिना
साहेब, अश्विनभाई, शांतिभाई की महिमा गाना... – प.पू. गुरुजी

संतों, हरिभक्तों, बहनों द्वारा
सद्गुरु संत पू. मनोजदासजी का अभिनंदन...

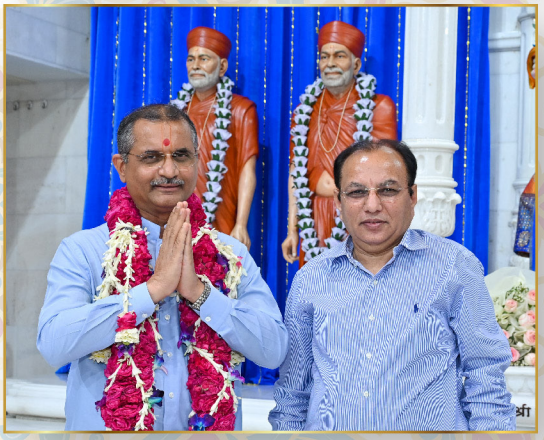

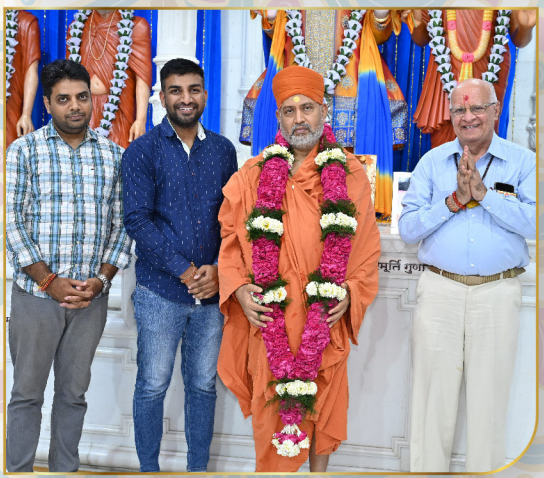

पू. सुहृदस्वामीजी को भावार्पण...

संतभगवंत साहेबजी के सैनानी सद्गुरु संत पू. मनोजदासजी का सत्कार समारोह...

अनुपम मिशन-संतभगवंत साहेबजी की नारायणी सेना के **सद्गुरु संत मनोजदासजी** को अधिकांश मुक्त डॉ. मनोजभाई सोनी के नाम से जानते ही हैं। 2020 में पौषीपूर्णिमा के महामंगलकारी दिन गुणातीत स्वरूपों के वरद् हस्तों से उन्होंने **'निष्काम कर्मयोगी साधु'** की दीक्षा प्राप्त की थी। वे **'संघ लोक सेवा आयोग'** के सदस्य के पद पर आसीन थे ही और अब **5 अप्रैल 2022** को इसी आयोग के **अध्यक्ष** पद पर नियुक्त हुए। यह केवल अनुपम मिशन ही नहीं, बल्कि पूरे गुणातीत समाज के लिये अत्यंत **गौरव** का विषय कहा जाये। सो, खूब राज़ी होकर **प.पू. गुरुजी** ने **13 अप्रैल 2022** की सायं उनका अभिनंदन करने की भावना व्यक्त की।

वर्षों पहले13 अप्रैल **1985**, बैसाखी के मंगलकारी दिन ही गुरुहरि काकाजी महाराज, गुरुहरि पप्पाजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी एवं प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के वरद् हस्तों से हमारे दिल्ली मंदिर की शिलान्यास विधि हुई थी और **पू. सुहृदस्वामीजी** को **भागवती दीक्षा** दी गई थी। ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा 40 वर्ष तक श्री ठाकुरजी का नैवेद्य बनाने की सेवा को अपना आदर्श बनाये, मृदुभाषी पू. सुहृदस्वामीजी तकरीबन 37 वर्ष से रसोई की सेवा के ज़रिये मुक्तों को राज़ी करते हुए, प.पू. गुरुजी की प्रसन्नता के पात्र बने हैं। ऐसे विशिष्ट दिन की सायं सद्गुरु संत मनोजदासजी के आगमन के बाद सभा प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम डॉ. दिव्यांग ने **संतभगवंत साहेबजी** का भजन– **'मुक्तों में गुणातीतभाव प्रगटाने आये हैं...'** प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् पू. सुहृदस्वामीजी एवं पू. डॉ. मनोजभाई सोनी के जीवन एवं गुणों का संक्षिप्त दर्शन कराते हुए **पू. राकेशभाई** ने प्रार्थना की–

*...दिल्ली मंदिर को **सुहृदस्वामीजी** जैसे साधु की भेंट देने के लिये काकाजी-गुरुजी को कोटि-कोटि धन्यवाद और सुहृदस्वामीजी की सेवा को भी खूब धन्यवाद... **उनकी कई बार तबियत भी अच्छी नहीं होती, लेकिन गुरुजी में से कोई आज्ञा आये, तो उनके वचन को कभी गिरने नहीं दिया।** गुरुजी की हर एक आज्ञा के लिये उन्होंने **'हाँ'** ही कहा है। उनके ऐसे दिव्य गुण हमारे जीवन में आयें...*

***मनोजभाई सोनी** का साहेब दादा, अश्विन दादा और शांति दादा के साथ अनूठा व*

घनिष्ठ संबंध है... गुरुजी अकसर बात करते हैं कि पहले भारत में राजा, संतों को आगे रख कर राज्य का कार्य चलाते थे। कई कारणों के वश वह प्रथा धीरे-धीरे लुप्त हो गई थी। लेकिन ***'संघ लोक सेवा आयोग' के महत्त्वपूर्ण पद पर आज सद्गुरु मनोजदासजी आसीन हुए हैं, तो फिर से आशा की एक किरण के साथ काकाजी के आशीर्वाद याद आते हैं कि भारत का भविष्य खूब उज्ज्वल है...*** *इन्होंने अपने सारे दिव्य गुण-क़ाबलियत साहेब की प्रसन्नतार्थ सत्संग के कार्य में लगा दी है। उसी का फल है कि लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार से उनकी प्रगति उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। महाराज व गुणातीत स्वरूपों से प्रार्थना कि वे इनके द्वारा बड़े से बड़े कार्य हमारे भारत देश के लिये कराते रहें...*

इसी प्रकार, **पू. डॉ. दिव्यांग** ने भी कई मुक्तों का महिमागान करते हुए आशिष याचना की—

...मनोजभाई अध्यक्ष की जिस कुर्सी पर बैठे हैं, वह उनके लिये कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन उनके पास इन्टरव्यू के लिये जो आयेंगे, उनके लिये बड़ी होगी। क्योंकि वे तो भले ही किसी न किसी सरकारी नौकरी के लिये आयेंगे, पर उन्हें ख्याल नहीं पड़ेगा कि इनके दर्शन करके उनका प्रभु के साथ का संबंध होता जायेगा। *सो, धे आर लक्की... आप जिस तरह देश व सत्संग की सेवा कर रहे हैं, ऐसी हम कर पायें-ऐसा आशीर्वाद देना... गुरुजी हमेशा कहते हैं कि* ***सुहृदस्वामी मंदिर की रीढ़ की हड्डी हैं... गुरुजी ने दिल्ली में सत्संग कराने के लिये जो मेहनत की है, जो मार्गदर्शन दिया, उसकी नींव का हिस्सा सुहृदस्वामी भी हैं।*** *आज मंदिर में इतनी सुविधाएँ हैं, पर एक समय था कि रसोई की स्लेब पर सुहृदस्वामी सोते थे... आज भी उन्हें यही रहता है कि किस प्रकार ठाकुरजी के पैसे बचें। इन्हें सभी के प्रति नॅचरल प्यार और फ़िकर है, जो कि बहुत रेयर होता है। जैसे मुक्तानंदस्वामी के लिये कहा जाता कि माँ जैसे साधु, ऐसे ही इनमें एक ममत्व झलकता है। ऐसा मुझे भी सभी के प्रति हो, ऐसी सुहृदस्वामी मेरे लिये धुन करें...*

पू. डॉ. दिव्यांग का वक्तव्य सुनने के बाद, **प.पू. गुरुजी** ने मंदिर के निर्माण कार्य में पू. अनिल शर्माजी के योगदान की बात करते हुए कहा—

आज हम बड़े खुश होकर ये एयरकन्डीशन्ड हॉल में बैठते हैं, लेकिन शिखर तक मंदिर का जो पूरा ढाँचा है, वो अनिलजी की निगरानी में हुआ है...

फिर प.पू. गुरुजी ने **पू. अनिलजी** को मंदिर के निर्माण कार्य का संक्षिप्त में विवरण देने के लिये कहा। तो, जो मुक्त इस कार्य में सहयोगी बने, उन सभी को याद करते हुए उन्होंने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया। तत्पश्चात् पू. सुहृदस्वामी के नेतृत्व में दिल्ली मंदिर में होते उत्सवों में रसोई की सेवा में तत्पर रहते **पू. चेतन** व **पू. निमित्त** ने पवई मंदिर से आये **पू. राजुभाई ठक्कर** के साथ **पू. सुहृदस्वामीजी** को सभी की ओर से हार अर्पण किया।

दिल्ली सत्संग समाज की ओर से **पू. डॉ. मनोजभाई** का सम्मान करते हुए **पू. विजयपालजी** ने उन्हें हार अर्पण किया। मंदिर के संतों-सेवकों की ओर से **पू. सुहृदस्वामीजी** व **पू. अक्षरस्वामीजी** ने और हरिभक्तों की ओर से **पू. कौशिकभाई जानी, पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी, पू. सुशील भास्करजी, पू. प्रकाशभाई ठक्कर** ने एवं सभी बहनों व भाभियों की ओर से **प.पू. दीदी, पू. बाती दीदी, पू. शोभना भाभी** और **पू. मीरां भाभी** ने पुष्प गुच्छ दिया।

गुरुहरि काकाजी महाराज को पल-पल राज़ी करने की भावना से जीते, प.पू. गुरुजी की जीवनशैली ऐसी है कि संपर्क में आते मुक्त जिस भी प्रभु स्वरूप संत से जुड़े होंगे, वे उन्हीं की महिमा को उजागर करके अपनी भक्ति अदा करते हैं। संतभगवंत साहेबजी पू. डॉ. मनोजभाई के इष्ट हैं, सो दिल्ली मंदिर के कई उत्सवों में प.पू. गुरुजी के साथ विशिष्ट संबंध के वश **संतभगवंत साहेबजी ने जो अलग-अलग परिधान पहने, तो उस समय खींची गई निराली दो मूर्तियाँ प.पू. गुरुजी ने पू. डॉ. मनोजभाई को स्मृति भेंट के रूप में दीं।**

तत्पश्चात् आशीर्वाद देते हुए **प.पू. गुरुजी** ने कहा—

महाराज ने आत्यंतिक कल्याण का घुघुबाज (समुद्र जैसा विशाल) मार्ग खोला... उसी प्रवाह में ***मनोजभाई को साहेब की ये दो मूर्तियाँ दी जाती हैं। स्वाभाविक ही इनके ऑफिस की टेबल या घर पर ये कहीं न कहीं मूर्तियाँ रखेंगे, तो सहज ही इनके यहाँ जो अधिकारी इन्टरव्यू या काम के लिये आयेंगे, वो साहेब की मूर्ति का दर्शन करेंगे। भले ही उस समय मनोजभाई को खुश करने के लिये साहेब की मूर्ति को प्रणाम भी करें, पर महाराज ने आशीर्वाद दिया है कि नंदे या वंदे जो भी संबंध में आयेगा, उसका आत्यंतिक कल्याण करना है। यह संबंधयोग का एक पहलू ही है।*** *मनोजभाई को भी मेरी यह विनती है कि उनके पास जो भी आये, तो तनिक भी कंजूसी रखे बिना साहेब, अश्विनभाई, शांतिभाई व पूरी विंग की महिमा गाकर हरेक को इस रास्ते पर*

अग्रसर करें। फलस्वरूप अपनी लौकिक, अलौकिक, आध्यात्मिक प्रगति करते रहें...

दूसरी बात— सुहृदस्वामी मंदिर की रीढ़ की हड्डी हैं, इससे बढ़ कर उनका एप्रीसीयेशन हम कर ही नहीं पायेंगे। पर, ये बात हम दिल से मानें कि ***सुहृदस्वामी के कारण ही गुरुजी फ्री-निश्चिंत रहते हैं, भजन कर सकते हैं और यह ऋण हम कभी भूलें नहीं।*** *काकाजी ऐसे आशीर्वाद बरसायें...*

अंत में **पू. डॉ. मनोजभाई** ने मार्गदर्शन दिया व सभी की ओर से आशीष याचना की—

*...**अनंत जन्मों के पुण्यों के उदय होने पर परम दिव्य संत पू. सुहृदस्वामी जैसे साधु के दर्शन प्राप्त होते हैं।** आज मेरा और हम सबका सौभाग्य है कि कोविड की महामारी के बाद श्री ठाकुरजी की कितनी अपार कृपा है कि हम सब स्वस्थ रूप से मंदिर में बैठ कर परम साधु का दर्शन पा रहे हैं।* ***सुहृदस्वामी इतने महान संत हैं, तो स्वाभाविक रूप से गुरुजी की क्या दिव्य अलौकिक भव्य गुणातीत स्थिति होगी।*** *आज* ***अक्षरधाम तुल्य इस दिव्य मंदिर की शिलान्यास की तिथि है...*** *आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो* ***बैसाखी*** *यानि नव वर्ष का दिन चुना गया। शायद इसका तात्पर्य यह है कि इस मंदिर के निमित्त एक नवप्रस्थान का आरंभ होने जा रहा था। उस दिन एक इमारत की नींव नहीं रखी गई थी, बल्कि* ***स्वयं भगवान स्वामिनारायण, अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामीजी के संकल्प स्वरूप, जिस महादर्शन की बात स्वयं ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने कही थी कि यमुना के तट पर एक मंदिर हो और उसके गर्भग्रह में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज विराजमान हों, उस आशीर्वाद, दर्शन और संकल्प की नींव रखी गई थी।*** *यहाँ जो महानतम-भव्य कार्य हो रहा है, उसका तो अभी इतिहास भी लिखना बाकी है। स्वामिनारायण संप्रदाय का एक इतिहास हमारे समक्ष है, लेकिन वो अधूरा है। एक समय आयेगा कि इस पृथ्वी के मुमुक्षु इतिहास के उन पन्नों को भी लिखेंगे, जिनमें ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के प्रवर्तन के दिव्य कार्यों का महिमा वर्णन किया जायेगा...* ***स्थूल रूप से योगीजी महाराज दो दशक के अल्पकालीन समय के लिये गद्दी पर विराजमान हुए, लेकिन इन बीस वर्षों में आध्यात्मिक उत्क्रांति के जो उन्होंने कार्य किये, उसे समझने के लिये दो सौ साल लगेंगे। उन्हीं कार्यों में से एक मनुष्य देह धारण किये गुरुजी हमारे समक्ष विराजमान हैं।*** *स्थूल रूप से यदि किसी को*

दर्शन करना हो कि गुरुजी कौन हैं, तो यदि थोड़ी अंतर्दृष्टि से **इस मंदिर का भी स्थूल दर्शन करेगा, तो ख्याल आयेगा कि यह केवल सुंदर नहीं, बल्कि इस मंदिर में कहीं भी नज़र करेंगे और जो भी छोटी से छोटी स्थूल चीज़ आपको नज़र आयेगी व आंतरिक आध्यात्मिक दृष्टि प्रकट होगी, तो उसमें गहन आध्यात्मिक विचार आप पायेंगे।** यहाँ कुछ भी ऐसे ही आसान नहीं है। **स्वामिनारायण संप्रदाय के इतिहास में ये अपने आप में एक अनूठा दिव्य सर्जन है...**

डॉ. दिव्यांग की कही छोटी-सी बात से ख्याल पड़ा कि कितनी महिमा से आप सब गुरुजी को प्रसन्न करने के लिये अपने पूरे जीवन को समर्पित किये हुए हैं। मेरी आयु 57 साल है, तो राकेशभाई ने तो थोड़े समय में ही मेरी जिंदगी के पचास का दर्शन करा दिया। वह सुनते हुए मुझे पता चल गया कि मेरी औकात क्या है? जो मैं हमेशा अपने आपको कहता रहता हूँ कि मेरी औकात तो यही है कि जिस देह को लेकर मेरी आत्मा प्रकट हुई, उसका प्रारब्ध तो यह था कि मुंबई के कालबादेवी के आस-पास मंगलदास मार्केट, मूलजी जेठा मार्केट, स्वदेशी मार्केट, भूलेश्वर में दुकानदारों के पास जाकर ये कहना— सेठ, अगरबत्ती लेंगे? साहेब, अगरबत्ती लेंगे? ये मेरे शरीर का प्रारब्ध था। **काकाजी की कृपादृष्टि हो गई, उनका प्रेम इतना था कि अपने बापूजी की उंगली पकड़ कर, बस में बैठ कर ताड़देव आना-जाना शुरु हुआ।** तब एक ही आर्कषण होता था कि बापु, अरूणभाई, राजुभाई ठक्कर प्यार से सेव-मुरमुरे और मोहनथाल का प्रसाद देंगे और बाकी समय में जूते-चप्पल ठीक से लगाने की सेवा मिलती थी। तो, **मैं तो जूते-चप्पल लाईन में लगाने वाला और दरबदर अगरबत्ती बेचने वाला एक आम इंसान हूँ और आज भी वही हूँ। लेकिन, एक दिव्य गुणातीत सत्पुरुष की दृष्टि हम पर पड़ती है, तो प्रारब्ध आपको कहाँ से कहाँ ले जाता है? उसी कृपादृष्टि के कारण शांतिदादा का जोग हुआ और साहेब दादा के श्रीचरण प्राप्त हुए...** गुरुजी ने अपने दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये और मुझे व हम सभी को अनुभव व अनुभूति के आधार पर श्रद्धा है कि केवल हम सब नहीं, इस ब्रह्मांड में जो भी जीव-प्राणीमात्र हैं, वो केवल प्रभु का कार्य करने के लिये ही आये हैं। हम तो भगवान के सीधे संबंधयोग में आये हैं। तो, **दिल्ली आने का निमित्त कुछ भी बना हो, लेकिन साहेबजी के द्वारा मैं भगवान का कार्य करने के लिये भेजा गया हूँ।** शर्त यही है कि मैं मेरा कार्य करने, न कि पैसा या प्रतिष्ठा हासिल

करनी है, बल्कि एक जाग्रतता रखनी कि मेरा जीवन प्रभु के कार्य के लिये है... यदि वह नहीं रहती तो चलने वाली तो प्रभु की ही है... आज जो मैं यहाँ बैठा हूँ, बोल रहा हूँ, फिर प्रसाद लेकर गाड़ी में बैठ कर जाऊँगा और फिर रात को सो कर कल सुबह जाग कर जो भी नित्य कर्म करूँगा, वह सब भगवान का कार्य है... तो विचार, वाणी, वर्तन सब भगवान के कार्य हैं। साहेबजी ने कहा है कि ***भगवान का कार्य, भगवान की रीति से करते जाओ...*** *हम सभी का उद्देश्य केवल यही हो जाये कि हे गुरुजी, हे साहेब दादा आप प्रसन्न हों। तो, वचनामृत में श्रीजी महाराज ने भी कहा है और साहेब दादा ने भी समझाया है कि मानव देह धारण किये प्रभु का कार्य भक्ति बन जाता है... गुरुजी के समक्ष शब्दों में ये बात इसलिये व्यक्त की है कि मैं पूर्ण जाग्रतता से इसी बात को पकड़ कर चलने का प्रयत्न कर रहा हूँ... मेरी प्रार्थना है कि मैं दिल्ली में भगवान स्वामिनारायण, अक्षरपुरुषोत्तम उपासना, आपकी और साहेब दादा की सुवास बन कर रहूँ...*

विसर्जन प्रार्थना के साथ सभा का समापन हुआ और सभी ने प्रसाद लिया। प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि व्यक्ति की ख़ानदानी और उच्च भावना उसके वर्तन से ख्याल पड़ती है। पू. डॉ. मनोजभाई सोनी केवल सांसारिक दृष्टि से उच्च पद पर आसीन नहीं, बल्कि अनुपम मिशन में भी अग्रणी हैं, लेकिन भले ही कितने बड़े हो जायें, पर अपने संस्कारों को संजोये रखना है, वह उनके एक छोटे से जॅस्चर से ख्याल पड़ा—

पू. डॉ. मनोजभाई जब गाड़ी में बैठने जा रहे थे, तो प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम के भाई **अक्षरनिवासी नीलकंठभाई की धर्मपत्नी पू. कुसुमबा** जो कि पू. डॉ. मनोजभाई को ताड़देव-मुंबई में आते-जाते हुए उनके बचपन से जानती हैं, वे उनसे मिलने गईं। पू. डॉ. मनोजभाई को जब पू. कुसुमबा का परिचय कराया, तो वे उन्हें पहचान गये और तुरंत ही उन्होंने पू. कुसुमबा के पैर छुए...

किसी बात पर प्रकाश फैंकते हुए **प.पू. गुरुजी** ने एक बार सहज ही सेवक पू. अभिषेक से कहा था—

मैं कभी नहीं भूला हूँ कि मैं एक सेवक हूँ...

प.पू. गुरुजी की इस भावना का दर्शन पू. डॉ. मनोजभाई द्वारा हुआ। ऐसे प्रसंगों की ओर दृष्टि रखते हुए हम भी सजग बनें, ऐसी सभी स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना!

10 अप्रैल, रामनवमी - भगवान स्वामिनारायण का प्राकट्य दिन

श्रीजी महाराज की जयंती निमित्त महापूजा एवं
पू. मनीष गोयलजी को 'सेवक साधु' की दीक्षा अर्पण...

हे गुरुजी! आपकी मरज़ी के अनुरूप वर्तने और जीने की सूझ देना...

काकाजी-पप्पाजी-स्वामीजी की जीवनशैली आत्मसात् करें
ताकि हमें देख कर हरेक को लगे कि वाक़ई ये उनके हैं...
— प.पू. गुरुजी

पार्षदी दीक्षा दिन की 62 वीं वर्षगाँठ निमित्त

प.पू. गुरुजी का अविस्मरणीय दर्शन...

रामनवमी
भगवान स्वामिनारायण का प्रादुर्भाव...

अबकी बार **10 अप्रैल 2022,** रविवार-**रामनवमी** व **भगवान स्वामिनारायण** का **प्राकट्य दिन**। अगले ही दिन **प.पू. गुरुजी की पार्षदी दीक्षा तिथि की 62वीं वर्षगाँठ थी।** सो, इस उपलक्ष्य में 10 अप्रैल की सायं 8:30 बजे से **प.पू. गुरुजी** एवं पवई मंदिर के **प.पू. राजुभाई ठक्कर** की निश्रा में विशिष्ट सभा आरंभ हुई। **पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी** ने स्वानुभव से माहात्म्य दर्शन कराया।

तत्पश्चात् दिल्ली मंदिर से खूब आत्मीयता से जुड़े **पू. राजकुमार गोयलजी** के सुपुत्र **पू. मनीष** ने प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों से **'सेवक साधु'** की दीक्षा प्राप्त की। अक्षरज्योति की बहनों द्वारा बनाया **बादामपूरी** का विशिष्ट हार, श्रीजी महाराज को अर्पित करके पू. मनीष ने सभी की ओर से प.पू. गुरुजी को अर्पण किया और पू. राकेशभाई ने प्रार्थना की—

*जब गुरुहरि योगीजी महाराज मुंबई की कपोलवाड़ी में आकर ठहरते, तो सुबह अपनी पूजा में सबको बादाम पूरी के छोटे-छोटे टुकड़ों का प्रसाद देते। **बापा के प्रति गुरुजी को अतिशय प्रीति और प्रसाद की ऐसी महिमा कि वे सुबह चार बजे उठकर प.पू. बापा की पूजा में पहुँच जाते।** बापा की वह स्मृति आज भी गुरुजी को ईदम है...*

*इसी प्रकार, हमें अपनी मूर्ति में निमग्न रखने के लिये प.पू. गुरुजी कभी उनकी पसंद का भोजन या वस्तु लाने की सेवा देते हैं। वह लाने के लिये हम कैसी उमंग से तत्पर रहते हैं? ऐसे ही हम सभी जानते हैं कि **गुरुजी को संप, सुहृदभाव, एकता और एक कुटुंबभाव से मिलजुल कर रहना खूब पसंद है।** लेकिन, सत्संग का सार जानते हुए और गुरुजी का अभिप्राय समझने के बावजूद भी, उनसे अधिक हमारे मन, स्वभाव और मान्यता को प्राथमिकता देते हुए, उनकी मरज़ी के मुताबिक़ हम वर्त नहीं पाते। अब हम अपने **'स्व'** को छोड़ कर **एट एनी कॉस्ट** आपकी मरज़ी के अनुरुप वर्तने और जीने लग पड़ें, ताकि आपको हमारी ओर से ठंडक हो जाये, ऐसे आशीर्वाद देने की कृपा करें।*

वर्षों से प.पू. गुरुजी की जीवनशैली एक सेवक की रही है। सो, अकसर वे गर्दन

में हार पहनते ही नहीं और यदि पहनते हैं, तो एक सैकण्ड में उसे उतार देते हैं। जबकि इस दिन प.पू. गुरुजी ने करीब पंद्रह मिनिट तक हार पहन कर, संतों-सेवकों के साथ खड़े रह कर, फोटो खिंचवा कर अविस्मरणीय दर्शन दिया। उनके इस जॅस्चर से ऐसा एहसास हो रहा था कि कहीं न कहीं हमारी प्रार्थना का वे प्रतिफल दे रहे थे।

ऐसी अनूठी मूर्ति देने के बाद **प.पू. गुरुजी** ने संक्षिप्त आशीर्वचन में अपनी हृदयगत बात कही—

स्वामीजी *हमेशा दो बातों पर ज़ोर देते थे, एक—*

दास का दास होकर, रहे जो सत्संग में,
भक्ति उसकी नेक जानूं मैं, नाचूंगा उसकी ताल में।

बात यही है लेकिन काकाजी-पप्पाजी शिक्षापत्री के निम्न श्लोक का ज़िकर करते—

निजात्मानं ब्रह्मरुपं देहत्रयविलक्षण्। विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा॥

यूं वे हमें आत्मा में स्थित रहकर, परमात्मा की आराधना करने की सूझ देते थे। जगत में रहते हुए, संसार के बीच में रहते हुए हम प्रभु के होकर, प्रभु के लिए प्रभुमय जीवन कैसे जी पाएं उसकी सूझ दोनों विभूतियों ने अपने जीवन से-डेमोन्स्ट्रेट करके हमें दी। उसी राह पर-नक़्शेकदम पर हमें अग्रसर रहना है।

वो नक़्शेकदम क्या? तो, ***केन्द्र में प्रत्यक्ष*** *स्वरूप को रखते हुए उनके संबंध वाले—छोटे-मोटे, स्त्री-पुरुष, आबाल-वृद्ध* ***सबको सिर का ताज समझना है।*** *इस भावना को जीवन का ध्येय बना कर हम जीएं। यूँ काकाजी-पप्पाजी-स्वामीजी की जीवनशैली आत्मसात् कर लें, ताकि हमें देख कर हरेक को लगे कि वाक़ई ये काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी के हैं। आज रामनवमी के दिन सबके लिए, मेरे लिए महाराज हमारी सबकी प्रार्थना स्वीकार करें। काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी और साहेब सब हमारी प्रार्थना स्वीकार करें—यही आरजू है...*

अंत में **प.पू. राजुभाई ठक्कर, संतों एवं सेवकों** ने आरती की और गुरुवर्य योगीजी महाराज की पूजा के प्रसाद की स्मृति कराने हेतु, प.पू. गुरुजी के हार में लगी बादामपूरी के छोटे-छोटे टुकड़े करके, सभी को उसका प्रसाद दिया।

सच, श्रीजी महाराज ने अपने प्राकट्य से भूखंड के सभी जीवों के श्रेय की

संपूर्ण जिम्मेदारी लेकर सनाथ बनाया। इतना ही नहीं, समय-समय पर शास्त्रों के गहन रहस्यों को सहज व सरल भाषा में अपने अमृत वचनों द्वारा उजागर करके मुमुक्षुओं को व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक, लौकिक व पारलौकिक सर्व प्रकार की सूझ दी। 'बॅप्स' द्वारा प्रकाशित **'पुरुषोत्तम बोल्या प्रीते'** भगवान स्वामिनारायण की अनमोल परावाणी का एक ऐसा ग्रंथ है कि जिससे विभिन्न प्रकरणों द्वारा हम जीवन का सही सार जान सकते हैं। ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी अपने आशीर्वचन में अकसर इसका उल्लेख करते थे। इस ग्रंथ के प्रकरण **'सत्संग'** में निहित निम्न सूत्रों द्वारा सहजता से दिव्य सत्संग का माहात्म्य समझें—

- ...नित्य यह ढूँढना कि **सत्संग की गरज़ कुछ कम तो नहीं हो रही।** जिसे उत्कृष्ट गरज़ हो, उसकी संगत रखें तो सत्संग का रंग उतरेगा नहीं।
- मन-इंद्रियों का संग न रहे उसी का नाम सत्संग है। ऐसे सत्संग से परमपद प्राप्त होता है...
- ...सुख में तो सभी सत्संग करते हैं, लेकिन विपत्ति में जो पार उतरे, उस पर हम राज़ी होते हैं...
- ...पुत्र, स्त्री, राज्य, हाथी, घोड़ा, मनवांछित भोग, सुरलोक, ब्रह्मलोक, वैकुंठलोक और अन्य भूमिकायें—सहजता से मिल जाते हैं, लेकिन **संत-समागम मिलना कठिन है।** संत-समागम से ऊँचा कोई सुख नहीं, यह सुख हमें दिया है...
- '...हमें तो सभी हरिभक्तों को ब्रह्मरूप करना है'— यही विचार मन में रहता है। इसलिये विचरण करते हैं। हमारी हर चेष्टा का हेतु केवल यही है कि जीव को ब्रह्मरूप करना है। **हमें जो जिस दृष्टि से निहारेगा, वो वैसा सुख प्राप्त करेगा...**
- सत्संग करते हुए दोषों से हमेशा डरना चाहिये और मन का विश्वास नहीं करना।
- ...संतों से हमारा योग बढ़े, ऐसा उद्यम करना। संतों से यदि अधिक वियोग होगा, तो सत्संग टिकेगा नहीं...
- जिसे भगवान और संत का दर्शन करके भाव नहीं होता, उसे नपुंसक और पाषाण हृदय जानना।
- अतिविषयी जीव का यदि सत्संग में चित्त चिपक जाये तो वह निर्विषयी हो जाता

है और सत्संगी बन जाता है। सत्संग ही विषय छुड़ाता है। विषय का छूटना अतिशय दुर्लभ है...

- ...सत्संगी की सेवा, ध्यान और तप से अधिक है। कोटि वर्ष के तप और ध्यान से जो फल प्राप्त होता है, वह एक दिन की सत्संग सेवा में समाया है। ऐसी सोच रखने पर सत्संग के बिना सब कुछ खारा लगता है...
- ...सभी साधनों से अधिक सत्संग है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी मानो रस छोड़ कर कूड़ा खाने जैसी बात है। सत्संग से ही मनोवांछित सुख प्राप्त होता है, दुःख देख कर जो डिगे नहीं, मानो उसी ने सच्चा सत्संग किया है।
- ...जिसे भगवान और भगवान के संत का विश्वास होता है, उसे भगवान कष्ट नहीं होने देते। जिसकी जैसी मति होती है, वैसे उसका मोक्ष होता है।
- प्रगट भगवान या उन भगवान के संत या उनके हरिभक्त का जिसे संग हो जाये, उसे सत्संग का योग होता है और चौरासी के रोग टलते हैं।

अक्षरधाम का अलौकिक सुख प्राप्त करने के लिये सत्संग के बिना अन्य कोई उपाय नहीं...

- **महिमा** के बिना **सत्संग** समझ नहीं आता। जिसे महिमा होती है, उसकी सत्संग में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती है। महिमा के बिना जो भी साधन करें, वो व्यर्थ हैं...
- ...हरिभक्तों में आपस में लगाव न हो, तो कितने ही साधन करें तब भी फल नहीं मिलता। जैसे कि मनुष्य के कई अंग निरोगी हों, लेकिन यदि श्वास ही बंद हो जाये, तो कोई भी अंग सहायक नहीं होगा। यूँ महिमा के बिना किये साधन का मूल्याकंन करना...
- ...सत्संग के अतिरिक्त अन्य सभी मृगतृष्णा जैसे हैं। सत्संग में सच्चा नीर समाया है, जिसे पीने से शांति होती है...

  सत्संग में आकर भी जिसे शांति नहीं होती, उसे पूर्व जन्म में संत का द्रोही और शापित समझना।

  जिसके अनंत जन्म के सुकृत उदित होते हैं, उसे ही सत्संग मिलता है।

12 मार्च, सायं – 'योगी परिवार आनंदोत्सव' की पूर्व संध्या पर आनंदोब्रह्म...

गुजरात-मुंबई से आये सब बैठे हैं, तो मैं मन से वहीं चला जाता हूँ... –प.पू. गुरुजी

हरिप्रसादस्वामीजी व अक्षरविहारीस्वामीजी मेरे गुरुजी द्वारा प्रगट हैं...

-पू. स्नेहलस्वामीजी

गुरुजी हम सबको आनंद में रखते हैं, मिल-जुल कर मज़ा करते हैं...

-पू. विज्ञानस्वामीजी

गुरुजी को बेफर, काजू या आइसक्रीम नहीं खानी, हमारे स्वभाव खाने हैं...

-पू. विज्ञानस्वामीजी

13 मार्च–प्राकट्योत्सव की पूर्व तैयारियाँ...

गुणातीत स्वरूप हमारे जीवन में आये, तभी सब कुछ मुमकिन है...

अपनेपन के शहंशाह, उत्तर के मुक्तों के जीवनप्राण हे गुरुजी, हमेशा आपकी सेरेछाया रहे...

सच, गुणातीत स्वरूप हमारे जीवन में आये हैं, तभी सब कुछ मुमकिन है... एक दृढ़ प्रतीति तो सभी को है ही कि आज के कलियुग में लौकिक व पारलौकिक दृष्टि से जिस सुरक्षा चक्र में हम जी रहे हैं, वो हमें मिले प्रत्यक्ष स्वरूपों की कृपा का फल है। इसीलिये गुरु का प्राकट्य पर्व मनाना तो उनके प्रति एक भक्ति अदा करने का सुअवसर होता है। इस **13 मार्च को प.पू. गुरुजी ने 85 वर्ष पूरे किये, जो कि 'मील का पत्थर' कहा जाये।** सो, **देश-विदेश के मुक्तों की सहुलियत के मद्देनज़र 23 से 25 दिसंबर 2022 — तीन दिन 'साधु पर्व' के रूप में मनाने का उद्घोष किया था।** लेकिन, कोरोना के प्रकोप से थोड़ी निजात दिला कर, दो वर्ष के बाद प्रभु मौका दे रहे थे, सो **'योगी परिवार आनंदोत्सव'** के रूप में प.पू. गुरुजी का 85वाँ प्राकट्य दिन मनाने के लिये, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के प्रतिनिधि व हरियाणा, पंजाब, मुंबई एवं गुजरात के मुक्त11 मार्च की सायं तक मंदिर पहुँच गये।

12 मार्च की सुबह प.पू. गुरुजी की पूजा का लाभ लेने के लिये सभी एकत्र हुए। धुन के बाद सहज ही छोटी सभा हुई। **पू. इलेशभाई** ने माहात्म्य दर्शन कराया और **प.पू. भरतभाई** व **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया। प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन की **पूर्व संध्या** पर मंदिर के कल्पवृक्ष हॉल में सत्संग सभा का आयोजन था, जिसमें **पू. इलेशभाई** (गुणातीत ज्योत), **पू. राकेशभाई शाह, पू. अनूपजी** (जगरांव), **पू. डॉ. दिव्यांग** एवं **पू. विश्वास** ने भजन प्रस्तुत करके भक्ति अदा की। **प.पू. विज्ञानस्वामीजी** (कंथारिया), **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** (मुंबई), **पू. चरणरजस्वामीजी** (हरिधाम), **प.पू. स्नेहलस्वामीजी** (सांकरदा) **और प.पू. वीरेनभाई** (सूरत-गुणातीत ज्योत) ने प.पू. गुरुजी के साथ के स्वानुभव से मार्गदर्शन दिया। अंत में स्वीट्ज़रलैंड रहते **पू. गिरीशजी** एवं उनकी धर्मपत्नी **पू. श्रुति अग्रवालजी** द्वारा प्रायोजित केक को स्वरूपों-संतों ने प्रसाद रूप बना कर इस विशिष्ट सभा का समापन किया।

13 मार्च की सुबह मंदिर के कल्पवृक्ष हॉल में पूजा करने के बाद प.पू. गुरुजी ने आनंदोब्रह्म कराया। **सायं 6:30 बजे** मंदिर के पीछे पार्क में **प.पू. गुरुजी** का **85वाँ प्राकट्योत्सव** मनाने सभी एकत्र हुए। प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि कोई भी डॅकोरेशन करो, वो कुछ थीम लिए हुए होना चाहिये। काफी समय से

संतभगवंत साहेबजी के आशीर्वाद की छोटी-छोटी वीडियो क्लीप्स वॉट्सएप के माध्यम से अनुपम मिशन द्वारा प्रसारित हो रही हैं। एक क्लीप में संतभगवंत साहेबजी ने **जी.पी.एस.** का उदाहरण देते हुए संत के साथ के संबंध की अद्‌भुत महत्ता बताई है। उससे प्रेरित होकर दिल्ली मंदिर के संतों-सेवकों ने प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त फ्लेक्स पर जी.पी.एस. का नक्शा बनाया था। लाल रंग मार्ग के 'ट्राफिक जाम' और नीला रंग 'क्लीयर' रास्ते को दर्शाता है। सो, प्रभु प्राप्ति करने में अड़चन पैदा करते काम, क्रोध, हठ, मान, ईर्ष्या, आशा, तृष्णा जैसे भाव लाल मार्ग पर दिखाये थे, जहाँ लिखा था– मनमुखी जटिल मार्ग। दूसरी ओर नीले मार्ग पर लिखा था– गुरुमुखी सरल मार्ग, जिसके द्वारा आसानी से प्रभु प्राप्ति कर सकते हैं। मंच की छत के बीचोंबीच घरेलू सामान से बनाई-वेस्ट में से बेस्ट सेटलाईट लगाई थी, जिसमें भगवान स्वामिनारायण सहित गुणातीत स्वरूपों का दर्शन हो रहा था। उस पर **'23-24-25 मिशन साधु पर्व'** लिखा था।

संतों-युवकों के साथ प.पू. गुरुजी ने फूलों से सुसज्जित विन्टेज कार द्वारा पंडाल में प्रवेश किया कि तभी मंच पर सत्संग के छोटे बच्चों ने **'आओ रे भाइयों, आओ रे भक्तों...'** भजन पर भावनृत्य प्रस्तुत किया। मंच पर सभी स्वरूपों-संतों के आसन ग्रहण करने के बाद, **पू. दीपक अग्रवाल** और **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** ने सभा का संचालन शुरू किया। आवाहन धुन और भजन **'सर्वोपरि निष्ठा काकाजी की जिनके जीवन में...'** के बाद **पू. भद्रायुभाई** की आवाज़ में ध्वनिमुद्रण के माध्यम से संतरूपी जी.पी.एस. का मर्म बताते हुए निम्न प्रार्थना प्रस्तुत हुई–

करीब पच्चीस साल पहले विदेश में रहते लोग काग़ज़ पर बने नक्शे की सहायता से किसी अनजान जगह पर पहुँचते थे। भारत में लोग राहगीरों से पूछते-पूछते गंतव्य स्थान पर पहुँचते, पर कई बार भटक भी जाते। पर, आप सभी जानते हैं कि Satellite के माध्यम से GPS-Global Positioning System विज्ञान की एक ऐसी खोज है, जिसकी सहायता से कोई किसी भी जगह आसानी से पहुँच सकता है।

इसी प्रकार, भगवान स्वामिनारायण के वरदान से हमें गुणातीत स्वरूपों के रूप में Satellites प्राप्त हुए हैं।

जैसे GPS यह भी बताता है कि कौन-सा Route Short है व कहाँ ज़्यादा या कम Traffic मिलेगा...

ऐसे ही हम जिस भी सत्पुरुष के आश्रित हैं, वे हमें प्रभु प्राप्ति का Shortcut बताते हैं। काम, क्रोध, हठ, मान, ईर्ष्या, आशा, अपेक्षा, महत्वाकांक्षा और मान्यताओं रूपी Traffic, प्रकृति के तांडव हमें कहाँ-कैसे परेशान करेंगे, वह बताते हैं।

सो, GPS की भाँति हम प्रगट संत का टोटल भरोसा करके, उनकी आज्ञा में रहेंगे, तो हमारा कठिन साधना मार्ग सरल व सुगम हो जायेगा और हम भटकेंगे नहीं।

*हमारा सौभाग्य है कि प्रत्यक्ष स्वरूपों रूपी GPS (**G**unatit **P**ath to **S**alvation) ने हमें अपना जोग देकर निहाल किया है। अनन्यभाव से उनसे संबंध दृढ़ करके जल्द से जल्द हम एकांतिकी भक्ति सिद्ध कर लें, ऐसी प.पू. गुरुजी के 85वें प्राकट्य दिन पर सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना...*

तदोपरांत **पू. पुनीत गोयलजी** (पानीपत) ने स्वागत प्रवचन किया। ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी के कृपापात्र **प.पू. बापुस्वामीजी** (सांकरदा), प.पू. कोठारीस्वामीजी के अंतेवासी सेवक **पू. योगीस्वामीजी** (हरिधाम) द्वारा मार्गदर्शन दिये जाने के बाद, अक्षरनिवासी वी.के. अग्रवालजी के पौत्र प्यारे **उज्ज्वल** ने **'गुरुजी तुम्हें प्रणाम...'** भजन प्रस्तुत किया। भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष **श्री श्याम जाजूजी** द्वारा सभा में संबोधन के बाद, **प.पू. वशीभाई** ने प.पू. गुरुजी की जीवनशैली पर प्रकाश डालते हुए आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् स्वरूपों, संतों, महानुभावों एवं प्रतिनिधि संत बहनों का हार से स्वागत किया गया। दिल्ली सत्संग समाज के मुक्तों एवं सभी केन्द्रों के प्रतिनिधियों ने प.पू. गुरुजी को हार एवं स्मृति भेंट अर्पण करके अपनी भावनायें व्यक्त कीं। वरिष्ठ सदस्य एवं प्रभारी चांदनी चौक लोकसभा क्षेत्र **डॉ. अनिल गुप्ताजी** ने हृदय उद्गार कहे और फिर **पू. राकेशभाई, पू. हितेनभाई** (पवई), **पू. अनूपजी** (जगरांव) एवं **पू. डॉ. दिव्यांग** ने मिल कर **'मेरा कर्मा तू, मेरा धर्मा तू...'** भजन व प्राकट्योत्सव निमित्त बनाया नया भजन **'चंदन तिलक पे कंकु लगाये, आँखें बड़ी तेरी ममता लुटायें...'** प्रस्तुत किया। पिछले पाँच-छः साल से प.पू. गुरुजी के प्राकट्य पर्व पर पवई मंदिर से आत्मीयता से जुड़े **पू. सचिन परब** अपने म्यूज़िक ग्रुप के साथ भजनों पर म्यूज़िक बजाने की सेवा करने आते हैं, उनके ग्रुप ने ऐसा म्यूज़िक बजाया कि पूरा पंडाल इलेक्ट्रीफाई हो गया।

तदोपरांत **प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई** और **प.पू. रतिकाका** ने आशीर्दान दिया। **संतभगवंत साहेबजी** इस उत्सव में दर्शन व आशीर्वाद देने के लिये

आने वाले थे, लेकिन किसी ज़रूरी कार्य वश वे नहीं आ पाये। पर, दिल्ली के मुक्तों की प्रार्थना सुन कर उन्होंने वीडियो क्लीप भेज कर सबको निहाल कर दिया। अंत में सत्संग के लड़कों ने **'मरज़ी में तेरी मिट जायें...'** भजन पर भंगड़ा करके उत्सव का समापन किया। प.पू. गुरुजी के 85वें प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियों को संजो कर, महाप्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

(उत्सव में स्थूल देह से मौजूद होने के बाद भी अकसर दिमाग़ तो कई कितने क्षेत्रों में घूम रहा होता है, इसलिये मुक्तों या स्वरूपों द्वारा कही गहराई की बातों को तब पकड़ नहीं पाते। अतः 12 व 13 मार्च को स्वरूपों ने जो भी आध्यात्मिक भोजन परोसा या मुक्तों ने स्वानुभवों से संत की महिमा बखानी, उसका मनन करने हेतु वे सभी प्रवचन संक्षिप्त में प्रस्तुत कर रहे हैं...)

12 मार्च, 2022 सुबह

प.पू. भरतभाई (पवई)

...गुरुजी के सान्निध्य में हमेशा आनंद करो, भाई आनंद... स्वामिनारायण भगवान भी आनंद कराने में ही मानते थे, सबको खुश कर देते थे।

एक बार स्वामिनारायण भगवान सारंगपुर में पांव लंबे करके बैठे थे। महानुभावनंदस्वामी जैसे ही उनके चरण स्पर्श करने गये, तो भगवान ने पांव समेट लिये। महानुभावानंदस्वामी बोले—प्रभु हम आपकी हरेक आज्ञा का पालन करते हैं, आप जितना उपवास कराते हैं, उतना करते हैं। हम जहाँ भी जाते हैं वहाँ फूलों की सेज नहीं, मार पड़ती है। यह सब इसलिए सहन करते हैं कि आपके चरणारविंद का हमें स्पर्श मिले, दर्शन मिले। पर, आप अपने चरण खींच लेते हैं।

तब स्वामिनारायण भगवान ने कहा—एक गांव में एक सेठ था। उसका बड़ा आवास था और उसके आस-पास थोड़ा कचरा पड़ा था। एक छोटा बच्चा वहाँ आया; तो कचरा देख कर उसे हुआ कि इसे साफ़ कर दूँ। उसके द्वारा की गई सफ़ाई देख कर सेठ ने पूछा—बेटा तुझे क्या चाहिए? उसने सेठ से कहा—10 किलो सोना दे दो।

सेठ ने कहा—ये कचरा साफ़ करना 2 पैसे का काम है और उसके लिये तू 10 किलो सोना मांग रहा है। बात का मर्म समझाते हुए महाराज ने कहा—इसी प्रकार तप, त्याग, व्रत ये सब सहन करना तो 2 पैसे का काम है। इसके बदले तुम मेरे चरणकमल का स्पर्श मांगते हो। ये चरण तो पृथ्वी पर आ ही नहीं सकते। आप मानो कि मैंने इतना तप किया, इतना सहन किया, इतना व्रत किया, इसके बदले में चरणकमल मिलें, तो वो ग़लत है।

यूँ स्वामिनारायण भगवान ने बताया कि वे कृपासाध्य हैं...

भगतजी महाराज ने जो भी सहन किया है, वो अद्‌भुत है। ऐसा तो कोई सहन नहीं कर सकता है। उन्हें तो जाति के हिसाब से भी सहना पड़ता था। सब ऐसा मानते थे कि गुणातीतानंदस्वामी के वे बहुत चहेते हैं। तो, सेवा के समय उन्हें दुगना भार देते थे। फिर भी वे हँसते मुख से सहन करते हुए सेवा करते थे। जब गुणातीतानंदस्वामी ने उन्हें साक्षात्कार कराया, तब स्वामी को हाथ जोड़कर उन्होंने कहा—प्रभु मैंने कुछ भी नहीं किया, फिर भी आपने इतनी बड़ी कृपा करी! मैं धन्य हो गया। यह अगर हमारे अंतर में बैठ जाए, तो हमारा अहोहो भाव कभी भी जाएगा नहीं। आनंद हमेशा बना रहेगा।

आज गुरुजी के प्रागट्य दिन पर यही प्रार्थना करनी है कि **हमारे अंदर हमेशा ये भाव बना रहे कि मैं आपका सेवक हूँ।**

पत्र संजीवनी के एक लेटर में काकाजी ने साक्षात्कार की बात करते हुए बापा को लिखा है कि आपने मुझे **'साक्षात्कार'** कराया, इसके लिए मैं जीवनभर का गुलाम हूँ, दास हूँ। इसी से ख्याल पड़ता है कि काकाजी ने क्या प्राप्त किया होगा? ऐसी स्थिति और प्राप्ति अद्‌भुत है।

इसी तरह गुरुजी भी खूब आनंद कराते हैं, जिसका कोई मूल्य नहीं है... काकाजी के साथ गुरुजी जुड़े और हमने देखा है कि काकाजी के पास वे सेवक के सेवक बन कर रहे हैं।

एक प्रसंग याद आता है। गुरुजी ने काकाजी से कहा था कि जब मेरे पिताश्री धाम में जाएं, तब में आपके पास होऊं। काकाजी ने सहजभाव से कहा—ऐसा ही होगा।1978 में काकाजी के हीरक महोत्सव पर गुरुजी मुंबई में थे, तभी उनके पिताश्री धाम में गए!

...काकाजी ने गुरुजी को यहाँ रखा, वो एक अद्‌भुत कार्य हुआ है। गुरुजी ने यहाँ रहकर समाज का जो सर्जन और कार्य किया है, वो भी अद्‌भुत है। **पू. गोरधनकाका** गुरुजी के बर्थडे पर पहली बार यहाँ आए थे, वे मुबंई वापिस गए और... तब वहाँ बोले थे कि **दिल्ली में काकाजी प्रगट हैं...**

लास्ट में काकाजी पंजाब गए थे; वहाँ ऐश्वर्य खूब खुला किया था। वनलता बहन ताड़देव आते थे, तब काकाजी अकेले बैठे होते थे। वनलता बहन के मन में हुआ कि स्वामीजी के साथ कितना बड़ा समाज होता है और काकाजी आप इतने बड़े हैं, आपका कुछ नहीं? 1981 में जब दिल्ली में **'स्वामिनारायण शताब्दी'** मनाई, तब काकाजी यहाँ से पंजाब जाने वाले थे। काकाजी ने गुरुजी से कहा कि वनलता को भी

पंजाब लेकर जाना है। वहाँ **जगरांव** में वनलता बहन ने देखा कि हर जगह—'पेड़ पर, छत पर, खिड़की में, जिसको जहाँ जगह मिली, वहाँ से सब काकाजी का दर्शन कर रहे थे। तब वनलता बहन को हुआ कि मेरे लिए काकाजी ने यह सब किया। **काकाजी** बहुत बार कहते भी थे—

मैं चाहूँ तो यहाँ से मेरठ तक की लाइन लगा दूँ। पर, फिर आपको लाभ नहीं मिलेगा।

इसी तरह से हम अभी पंजाब के नानकसर गुरुद्वारा गए थे, तो वहाँ के जत्थेदार ने गुरुजी को भेंट में तलवार देकर उनका खूब सम्मान किया। यूँ हमें पता चलता है कि ऐसे **'गुणातीत पुरुष'** हमारे साथ में हैं, हमारा कितना बड़ा भाग्य है? पर, हम उनको कभी मज़बूर न करें, उनकी मरज़ी में जीवन जीएं।

पू. इलेशभाई (गुणातीत ज्योत)

...काकाजी और पप्पाजी का एक सूत्र था—आनंद करो...

पप्पाजी कहते थे—

ब्रह्म का गुण आनंद है। सर्वोपरि भगवान के ये स्वरूप मिले हैं। सो कुछ भी करो लेकिन चुगली, एक-दूसरे की निंदा मत करो। सर्वोपरि मिले हैं, सो 'जप, तप, व्रत' कुछ भी साधन नहीं करना। आपको जो गुरु-संत मिले हैं, उनकी आज्ञा में रहो।

दूसरा उपाय—सुबह-शाम भजन कर लो। लेकिन **भजन-प्रार्थना एकदम एकाग्र होकर, तीव्रता से करो। मैं और स्वरूप दो ही और कोई नहीं।** तो, पूरे दिन वे हमारे आस-पास रक्षा करते ही रहेंगे। सेवा करते हुए हमें स्मृति की हैबिट नहीं है।

पप्पाजी तो कहते थे कि स्मृति और दर्शन ऐसे करो कि दिल में एकदम उतर जाए। ऐसा दर्शन करो कि याद किये बिना ही वो याद रहे।

दूसरा एक अर्थ बताते थे—मैं आपका हूँ और आप हमारे हो। मेरी आत्मा में आप विराजमान हो। पूरे दिन अखंड स्मृति रखकर यदि सब क्रियाएं करें, तो एहसास होगा कि वे मेरे साथ हैं।

सत्पुरुष ने चाहे देह छोड़ दिया हो, तो भी मेरे साथ अखंड हैं। यह कान्सियसनेस दिल्ली-पवई के समाज में देखते हैं। काकाजी ने देह से बिदा ले ली, लेकिन गुरुजी, दिनकर दादा, भरतभाई, वशीभाई ने काकाजी को प्रगट रखा है। नया-पुराना जो भी आता है, किसी को नहीं लगता कि काकाजी नहीं है।

गुरुजी में काकाजी हैं ही, वे जो भी क्रियाएं करते हैं, वह मानो काकाजी ही करते हैं। वो दर्शन हमें हो रहा है...

हम इन स्वरूपों में डूबे रहें और हमारे संकल्प, भाव और क्रिया, हमारी वाणी, वर्तन और विचार से वे राज़ी हों, ऐसा होता रहे। इस हेतु महाराज स्वामी, काकाजी, पप्पाजी, गुरुजी, भरतभाई हमें खूब-खूब बल दें...

प.पू. गुरुजी

...गुजरात-मुंबई से आए हुए सब बैठे हैं, इसलिए मैं मन से वहीं चला जाता हूँ। जब हम संस्था में थे, तब फड़िया मामा ने 'ब्रह्म' कहने के बारे ऑपोज़ीशन करा था कि बापा को ब्रह्मस्वरूप नहीं बोला जाता है। 'ब्रह्म' की वो बात हमारे सत्संग में भी घूम रही थी। हम काकाजी के पास ताड़देव में ही बैठे थे। मैंने काकाजी से पूछा कि काकाजी ये 'ब्रह्म' क्या होता है?

हमने सोचा भी था कि काकाजी बताएंगे—योगीजी महाराज! काकाजी जब भी कोई बात करते, तो घुमा-फिरा कर योगीजी महाराज पर ला देते। पर, काकाजी बोले— ब्रह्म क्या होता है—यह बात रहने दो। राजा, पहले यह बताओ कि ब्रह्म का लक्षण क्या? फिर खुद बोले—शास्त्री तुम या मैं? मैं अभी तुम्हें शास्त्रोक्त रीति से बताऊँगा। उन्होंने पूछा—ब्रह्मसूत्र पढ़ा है? उसका पहला सूत्र ही है— **'आनंदोब्रह्म!'** ब्रह्म का लक्षण है—**'आनंद!'** जहाँ बैठो, जिसके पास बैठो, जो भी बात करो, जो भी क्रिया करो, उसमें से आनंद उत्पन्न हो—तो वहाँ ब्रह्म प्रगट है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इतने फिल्ड्स में काम करते हुए भी काकाजी को जब भी किसी सेक्टर का प्रश्न पूछा जाए, तो उसका टॉप जवाब मिलता। बिज़नेस का आया हो, तो उसे बिज़नेस करने की टॅक्नीक बताते। पॉलिटीक्स का कोई आता, तो वे उसे पॉलिटीकल एडवाइस देते। यूँ एक ही व्यक्ति से एक साथ ऐसी एडवाइस नहीं मिल सकती। हाँ, एक फिल्ड का व्यक्ति तुम्हें उस फिल्ड के बारे में गाइड करता रहेगा। जैसे केमेस्ट्री का प्रोफेसर केमेस्ट्री फुल डिटेल में समझा पाएगा। उसे एकदम टिग्नोमेट्री पर ले जाओ, तो वो सिखाएगा लेकिन इतना इन्ट्रेस्टफुली-स्कीलफुली नहीं सिखा पायेगा। तो, हम लोग खूब खुशनसीब हैं। इसलिए तो महाराज ने **भक्तचिंतामणि** में उल्लेख किया है कि **हमारे जैसा भाग्यशाली दूसरों को मानना—वही भूल है।** दूसरों की थोड़ी चमक देख कर हमें ऐसा हो जाता है कि हमारे पास ये नहीं है। पर, **हमारे पास जो प्रभु हैं, वो हर प्रकार से हमारा रक्षाकवच**

है। जैसे कोई कहता है—मेरे पास माँ है। ये निश्चिंतता हमें होनी चाहिये कि मेरे पास प्रभु है, जो मुझे मिले हैं और इन्होंने मुझे अपनी गोद में बिठाया है। हम तो कितनी बार गोद से उतर भी गए होंगे। पर, इन्होंने पकड़-पकड़ कर हमें बिठाया है। अपने यहाँ ऐसे परमतत्त्व की व्यक्तिस्वरूप में परंपरा महाराज ने अखंडित रखी है। मुझे बराबर याद है काकाजी ने जब शरीर छोड़ा, तब सत्संग के वड़ीलों को बापु और मेरे बारे में चिंता हो गई थी। उस समय मैं जब वडोदरा आया, तो **प.पू. हरिप्रसादस्वामी** स्टेशन पर ही खड़े थे! उन्होंने मुझसे कहा—

चलो, हम हरिधाम जायें और... चिंता नहीं करना, काकाजी से ज़्यादा नहीं, पर इतना तो जतन करुँगा ही...

अग्नि संस्कार विधि के लिए काकाजी की जब शोभायात्रा निकली, तो उस समय पप्पाजी ने भी हाथ पकड़ कर मुझे अपने साथ-साथ ही रखा।

मैं कहता हूँ कि हमें तो ये निश्चिंतता और निर्भयता पर हमेशा छलांग लगाते रहना है। छलांग क्या लगानी? कोई भी काम हो तो—कैसे होगा? होगा कि नहीं होगा? मैं कर पाऊंगा? यह नहीं सोचना। जहाँ 'मैं' कर पाऊँगा कि बात आती है, वहाँ फिर भगवान का बल नहीं रहता है। इसलिए कोई भी काम का आरंभ, जैसे सुबह उठो तो मन में सोचना—हे महाराज! आज सारा दिन आप मेरे साथ हैं, उसकी प्रतीति कराते रहना। महाराज तो हैं, पर हम लोग भूल जाते हैं। ये अपना निजी स्वाध्याय जैसा बन जाए, कार्यक्रम जैसा बन जाये यही करना है।

12 मार्च, 2022 सायं

प.पू. विज्ञानस्वामीजी (कंथारिया)

...महाराज के समय में मुक्तानंदस्वामी और ब्रह्मानंदस्वामी नाचते थे, तब जो माहौल बनता होगा, ऐसा ही दर्शन आज भक्तों ने कराया। वो ही परंपरा चली आ रही है... ऐसी आत्मीयता हो जाती है, इसका कारण ब्लड रिलेशन नहीं है, लेकिन भगवान स्वामिनारायण की कृपा है। उन्हें ही हम कर्ता-हर्ता मानते हैं। **जीवन में खुद से जब नहीं हो, तब हमें मुश्किल, दुःख, क्लेश लगता है। उस समय स्वरूपों से प्रार्थना करें कि हमारी रक्षा करो।**

एक भजन है—उगती प्रभा से कार्य प्रारंभ में सहाय करो ऐसी याचना है... जब मैंने सुना, तो मुझे बहुत पसंद आया। साधक को यही करना है। महाराज के समय में 108 प्रकरण में से जो गुज़रे थे, वही हम सब लोग यहाँ बैठे हैं और महाराज भी यहीं

बैठे हैं... यह मानना हमारी साधना है। भले बहुत दिनों के बाद हम सब मिले हैं, फिर भी ऐसा महसूस हो रहा है कि हम सब साथ में ही थे। स्टेज पर मैं सेवा कर रहा था, गुरुजी वहीं बैठे थे। मैंने उनसे कहा कि साधु पर्व पर मैं आ पाऊं या न आ पाऊं, **सो यह करके संतोष मान लेता हूँ।** तुरंत ही गुरुजी बोले– ऐसी नॅगेटिव बात क्यों कर रहे हो?

गुरुजी हम सबको आनंद में रखते हैं। सबके साथ मिल-जुलकर मज़ा करते हैं। उन्हें वेफर, काजू या आइसक्रीम नहीं खानी, मगर हम सबके स्वभावों को खाना है।

अगर हम उनके पास या उनके संतों-सेवकों के पास सरल रहेंगे, तो हमें कुछ करना शेष रहता ही नहीं। हम सबसे कुछ होने वाला नहीं है, जो उन्हें पहुँचे? **उन्हें सिर्फ हमारी भावना या लगन पहुँचती है...** हम सबके लिए वे भजन-प्रार्थना करते हैं और हमारी प्रार्थना उन्हें पहुँचे, इसीलिए हमें उन्हें याद करना है।

एक बार गुरुजी विद्यानगर आए थे और हमने साथ में लंच किया। तब पप्पाजी ने गढड़ा प्रथम का तीसरा वचनामृत समझाते हुए बताया था। उसके अनुसार गुरुजी को याद करने से सब कुछ हमारे अंदर आ जायेगा। उनका स्वास्थ्य कैसा भी हो, फिर भी मूर्ति देने में वे कुछ कमी नहीं रखते। भगवान उनसे कराते हैं-इन्स्ट्रूमेंट की तरह यूज़ करते हैं, वे खुद नहीं करते... वे भगवान का इन्स्ट्रूमेंट बन गये हैं। इनके द्वारा भगवान स्वामिनारायण, योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी काम कर रहे हैं। इन्होंने अपना अस्तित्व विलीन कर दिया है, तो भगवान की शक्ति काम कर रही है। आज हम ऐसी प्रार्थना करते हैं कि इनकी जो इच्छा हो, वही हमसे हो सके। स्मृतियाँ भी इसीलिये देते हैं कि हम उन्हें याद करें... हम सब प्रार्थना करें कि दिसंबर में साधु पर्व तक हमारे अंदर सरलता आ जाये कि वे जो बोलें वही हम करें, और कुछ करें ही नहीं।

योगीस्वरूपस्वामी बात कर रहे थे कि कोठारीस्वामी ने उन्हें सबसे पहले नियम यही दिया था कि सरलभाव रखना, बाकी सब महाराज संभाल लेंगे। वो सरलता क्या–**सत्पुरुष की हाँ से हाँ और ना से ना।** जितनी आसानी से बोल रहा हूँ, वैसा करना आसान नहीं है। हम एक ही बात पर सोचें कि हमें हमारी बुद्धि कब लगानी है? जब वे कोई सेवा सौंपे, तब वो कैसे अच्छी तरह से कर पाएं, उसमें बुद्धि लगानी है।

पू. ओ.पी. अग्रवाल (मुंबई)

...दो साल के बाद ये आनंदोत्सव मनाने के लिए हम यहाँ एकत्र हुए हैं और यह कोई सामान्य बात नहीं है। हम सब बहुत भाग्यशाली हैं। गुरुजी पल-

पल हमें आनंद कराते हैं, उसमें शामिल हो पाना ही हमारा बहुत बड़ा भाग्य कहा जाए...
गुरुजी ने कई बार बताया है कि हम सब महामानव की योनि के हैं।

...विज्ञानस्वामीजी ने अपनी बातों में एक सरल रास्ता बताया कि **गुरुजी जो कहें वो करना है। फलतः कृपा से हमें सब कुछ मिल जाएगा, पर अपनी मरज़ी से करने जायेंगे, तो कुछ नहीं मिलेगा...**

हे गुरुजी! मेरी तो कोई ताक़त नहीं है, आप समर्थ हैं, काकाजी का स्वरूप हैं। आपने कृपा करके हमें अपने योग में ले लिया है, तो हम आपके बल से ही सब कुछ कर पाएंगे और आनंद में रहेंगे।

एक प्रसंग पढ़ा था—'समर्थ गुरु रामदास के एक शिष्य थे। वे भिक्षा मांगने के लिए एक गांव में गए। एक तांत्रिक के घर के आगे गुरु की महिमा गाते हुए आवाज़ लगा रहे थे—समर्थ गुरु रामदास की जय, भिक्षान्न देही। सुन कर तांत्रिक को बहुत गुस्सा आया कि ये कौन है, जो मेरे दरवाज़े पर खड़े होकर दूसरे का गुणगान कर रहा है। वो बाहर निकला और क्रोधवश उसने श्राप दे दिया कि कल सूर्योदय से पहले तेरी मृत्यु हो जायेगी। गांव में माना जाता था कि ये तांत्रिक जिसे श्राप देता है, वो सत्य हो जाता है। गांव वाले डर गए और वो खुद भी डर गया व निराशा से अपने गुरु के पास आश्रम में पहुँचा।

गुरु ने पूछा—*आज भिक्षा में क्या लाये?*

उसने बताया—*मेरी अपनी मृत्यु।*

ऐसा कह कर सारी बात अपने गुरु को बताई।

गुरु ने कहा—*अच्छा, तुम सुबह से निकले हो, तो अभी जाकर भोजन कर लो।*

शिष्य ने कहा—*क्या भोजन करूं? यहाँ मेरे प्राण सूख रहे हैं और आप कह रहे हो कि भोजन कर लूं! मेरे मुँह में तो 1 दाना भी नहीं जाएगा।*

तब गुरु ने कहा—*जैसी तुम्हारी इच्छा।*

फिर रात को सोने का समय आया, तो गुरु ने कहा—*चलो, सो जाते हैं।*

उसने गुरु से कहा—*नींद तो आएगी नहीं; क्या करूं?*

गुरु ने कहा—*तुम मेरे पैर दबाओ और रातभर दबाते ही रहना, छोड़कर कहीं नहीं जाना।*

रात में वो पैर दबा रहा था, तब तांत्रिक के श्राप का खेल शुरु हुआ। तांत्रिक ने

खूब धन-दौलत के साथ देवी के रूप में किसी को भेजा और...

देवी ने आवाज़ लगाई— *मैं ये सारा आपके लिए लाई हूँ, ये ले लो।*

शिष्य को एकदम ख्याल आया— *मैं दरवाज़े तक नहीं जा सकता, गुरुजी ने मना किया है।*

उसने वहीं से बोला— *आप मुझ पर कृपा कर रहे हो, तो आप यहीं आकर मुझे दे दो।*

देवी नज़दीक नहीं आई और तांत्रिक के पास लौट गई। फिर तांत्रिक ने शिष्य की माँ के रूप में किसी को भेजा। काफी समय से वह अपनी माँ से नहीं मिला था।

माँ ने दूर से आवाज़ लगाई— *आ बेटा, मेरे गले लग जा।*

उसे अपने गुरु की बात याद आई, तो उसने कहा— *आप मेरे पास आ जाओ।*

वो भी वापस चली गई। तांत्रिक बड़ा परेशान हो गया कि मेरे सारे प्रयास विफल हो रहे हैं, तो उसने सीधा यमदूत को भेज दिया।

यमदूत ने दूर से आवाज़ लगाई— *मैं तुम्हारा काल हूँ और तुम्हें लेने आया हूँ, तुम्हें मेरे साथ चलना पड़ेगा।*

शिष्य ने कहा— *तुम काल हो या महाकाल हो, लेकिन मैं आपके पास नहीं आ सकता; अगर आपको ले जाना है, तो आप मेरे पास आकर मुझे ले जाओ।*

यमदूत भी चला गया।

सुबह जब समर्थ गुरु रामदास उठे, तो उन्होंने शिष्य से पूछा— *तुम तो जीवित हो?*

शिष्य ने कहा— *हाँ, मुझे भी लग रहा है कि मैं जीवित हूँ।*

रात की सारी घटना गुरु को जब वह बता रहा था, तो उसे ख्याल आया कि गुरु ने आज्ञा करी थी कि तुम मेरे चरण छोड़ कर मत जाना। मैं चरण छोड़ कर नहीं गया, इसी कारण बच गया। कहने का तात्पर्य है कि गुरु की हां में हां और ना में ना रखेंगे और उनकी आज्ञा का सारधार पालन करेंगे, तो काल-महाकाल भी दूर भाग जाते हैं।

आज सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना कि हम आपकी आज्ञा का सारधार पालन कर सकें। आपने खुद उठा कर अपनी गोद में हमें बिठा लिया है। अब हमारा फर्ज़ है कि उस गोद में से उतर कर हम कहीं भागे नहीं। बस उसमें बैठ कर आनंद करते रहें...

पू. चरणरजस्वामी (हरिधाम)

...पिछले साल अक्तुबर में स्वामीजी का अस्थि विसर्जन करने के लिए हरिद्वार गये थे। वहाँ रात को बारिश हुई और सुबह आरती के समय दासस्वामीजी ठाकुरजी का दर्शन करने गये। बारिश के कारण मार्बल गीला हो गया था।

सो, दासस्वामीजी वहाँ गिर गये और पैर की हड्डी टूट गई। गुरुजी ने प्रेमस्वामीजी के लिये अलग अपनी गाड़ी भेजी थी। प्रेमस्वामीजी ने मुझसे कहा–दासस्वामीजी को इसी गाड़ी में जल्दी से दिल्ली ले जा। हम वहाँ से 7 बजे दिल्ली आने निकले। गुरुजी ने डॉ. दिव्यांगभाई, अनुजभाई को कह कर डॉ. कमल दुरेजा के घर पर रात को भेजा। डॉ. कमल ने कहा कि सर्जरी करनी पड़ेगी। दासस्वामी बोले कि मुझे यहाँ नहीं, बड़ौदा में करानी है। फिर गुरुजी, प्रेमस्वामीजी से प्रार्थना की और त्यागस्वामीजी से बात की। सबसे बात करने पर रात को 10 बजे दासस्वामीजी दिल्ली में सर्जरी करवाने के लिये तैयार हो गए। डॉ. साहब की खुद की लड़की बीमार थी, पर उसे छोड़ कर वे दासस्वामीजी को देखने आए। गुरुजी के आशीर्वाद और प्रेम के बिना तो हो ही नहीं सकता। अभी ओ.पी.जी., मासा, वशीभाई सब नृत्य कर रहे थे। जगत की शादियों में ऐसे सब लोग नृत्य करते हैं। उसे डांस बोला जाता है, यहाँ तो भगवान के सामने नृत्य होता है न। भगवान के पास नृत्य करना, वो कृपा के बिना, मन-बुद्धि के समर्पण के बिना संभव ही नहीं है। वर्ना अहम् आ जाए कि मैं तो चार्टर्ड एकाउंटेंट हूँ। स्वामीजी का संकल्प था कि दास का दास बन कर जीएं। तो, हमारे जीवन में सरलता-दासत्व प्रगटे, हमारे जीवन के अंदर से हठ, मान और ईर्ष्या सब स्वामीजी, प्रेमस्वामीजी और आपकी कृपा से निकल जाए। गुरुजी, हमारा जीवन निर्मल बन जाए आप ऐसा आशीर्वाद देना।

मुझ पर गुरुजी की एक कृपा और हो गई है। वे जो पाग पहनते हैं, वो बनाने की सेवा मुझे मिली है। स्वामीजी और सब संतों की पाग मैं बांधता हूँ। अब गुरुजी ने मेरी सेवा ग्रहण की। पाग बांधने पर भी गुरुजी ने मुझे थैंक्यू कहा। मैंने गुरुजी से कहा कि आप थैंक्यू ना बोलो, आशीर्वाद दो। थैंक्यू बोलने से मेरे अंदर थोड़ी गुदगुदी होगी-आनंद होगा, तो मेरा अहंकार बढ़ेगा। **अहंकार बढ़ाने के लिए तो हम यहाँ आये नहीं हैं। अहंकार को टालने के लिए यहाँ आये हैं।** आप आशीर्वाद देना कि हमारे जीवन में से अहंकार टल जाए। हठ-मान का भाव निकल जाए और दास बन कर YDS परिवार की सेवा हो पाये।

दूसरी बात–प्रेमस्वामीजी की निश्रा में हम संत रह रहे हैं, तो बस मन-कर्म वचन से त्यागस्वामीजी व वड़ील संतों का स्वीकार करके सेवा कर सकें। स्वामीजी का संकल्प था आत्मीयता, दासत्व, सुहृदभाव, एकता–तो इसमें हमारा पूरा जीवन समर्पित हो जाए। मेरा नाम चरणरज है, रास्ते में सब धूल के ऊपर चलते हैं, जिससे रज ऊपर उठ नहीं पाती

है, ऐसे ही मेरी मन-बुद्धि सब भक्तों के सामने नतमस्तक रहे। बड़े पुरुष के आगे-सामने कभी भी मेरी बुद्धि न लगे और दासभाव से मैं सबकी सेवा कर सकूं। गुरुजी, प्रेमस्वामीजी और त्यागस्वामीजी ऐसा आशीर्वाद दें...

पू. स्नेहलस्वामीजी (सांकरदा)

...सच, आध्यात्मिक सत्युग चल रहा है। गुणातीत पधारे, तो जगत ने जो ना सुना था, ना देखा था, ना जाना था, ऐसा संबंधयोग-कृपा मार्ग उन्होंने दिया। केवल दृष्टि से सबको मूर्ति सिद्ध बनाया। सर्वोच्च कक्षा का ज्ञान, आज्ञा में रह कर वड़वानल अग्नि जैसा बन सकें, ऐसी साधना कृपा में दी। उन्हीं के भव्यातिभव्य स्वरूप शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज आये, जिन्होंने काकाजी-पप्पाजी जैसे स्वरूपों की भेंट दी। वाक़ई हमारे जैसा भाग्यशाली कोई नहीं। 1956 में पहली बार योगीजी महाराज का 65वाँ प्राकट्य दिन मनाया गया। योगीजी महाराज मुंबई-कपोलवाड़ी में पधारे थे और घर-घर पधरामनी करने जाते थे। तब मैं तेरह साल का था। तीसरी मंज़िल पर मेरे पूर्वाश्रम के घर पर बापा आये, तो फटी हुई रज़ाई पर हमने उन्हें बिठाया और सवा रुपया भेंट दी। **वे कोई भेंट लेने के लिये नहीं आये थे, वे तो चैतन्य को लेने के लिये आये थे।** एक ही साल में एक स्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी युवक रूप में हमारे घर आये और सुबह दस बजे से लेकर रात के दस बजे तक सतत बात करते रहे। फिर दूसरे स्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का युवक रूप में संबंध हुआ और फिर पजामा व शर्ट पहने तीसरे स्वरूप दिलीपभाई (गुरुजी) का संपर्क हुआ। तब ख्याल नहीं था कि सारी जिंदगी इन स्वरूपों के साथ रहना है। योगीजी महाराज ने गुरुजी को अक्षरधाम का खज़ाना दिया। इन सभी नेताओं के नेतृत्व में रखने के लिये हमें बापा लेने आये। इस बात को 66 साल हुए और **आज गुरुजी 85 साल के हो रहे हैं। उनमें से इतना तेज़ निकल रहा है।** एक बार वे दासस्वामीजी से बोले थे कि हम 75 साल के होंगे, तो कैसे लगेंगे? आज देख रहे हैं कि 85 साल की उम्र में वे कैसे लगते हैं। **गुरुजी 85 साल के हुए, लेकिन अभी 15 साल बाकी हैं और स्नेहलस्वामी उनकी शताब्दी मना कर जायेंगे।** कोरे काग़ज़ पर लिख दिया है... 1966 के विमुख प्रकरण में जब गुरुजी ने मुझसे पूछा कि यहाँ संस्था में रहना है या हमारे साथ आना है? मैं कुछ बोला नहीं, लेकिन मन में विचार किया कि **हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी और गुरुजी यदि मुझे नरक में ले जायेंगे, तो भी**

मैं वहाँ जाने के लिये तैयार हूँ। मुझे अक्षरधाम में रख दिया। हरिप्रसादस्वामी और अक्षरविहारीस्वामी मेरे गुरुजी के द्वारा प्रकट हैं, हैं, हैं... 1985 में पप्पाजी सांकरदा आये थे। तब उन्होंने हमसे कहा था कि माहात्म्य की ऐसी खटाई तुम में चढ़ा दूँगा कि जगतरूपी चावल क्या हलवा भी नहीं खा सकोगे... हरिप्रसादस्वामीजी और अक्षरविहारीस्वामीजी तो बीमारी ग्रहण करके चले गये। हे गुरुजी, आप कोई बीमारी ग्रहण नहीं करना...

पू. वीरेनभाई (सूरत-गुणातीत ज्योत)

...आज हम गुरुजी के दर्शन के लिए आये, तो पप्पाजी के सान्निध्य में जब बैठते थे, वैसी अनुभूति होती है। पप्पाजी कभी बोलते नहीं थे, लेकिन कोई आता तो एक स्माइल, आखों से स्वागत करते थे, ऐसी ही अनुभूति गुरुजी द्वारा हुई। घंटों उनके सामने बैठे होंगे, वे कुछ बातचीत भी नहीं करेंगे या हमारे सामने देखेंगे भी नहीं, लेकिन समय जैसे थम जाता है और उठने का किसी को मन भी नहीं होता है। मैक्सीमम पूछेंगे—खाना खाया कि नहीं। ठहरने वाले हैं, तो उनके रहने की व्यवस्था हुई कि नहीं।

एक बार पप्पाजी से पूछा कि आप और कुछ तो पूछते नहीं हो कि आप कैसे हो? क्या चल रहा है? कोई दुनियादारी की भी बात नहीं करते हैं? तब पप्पाजी ने बोला था—संबंध में आए हैं न बस। उनको और कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। हम कभी-कभी यहाँ की ऑनलाइन सभा का लाभ लेते हैं। उसमें गुरुजी के प्रति सब अपने अनुभव बताते हैं। किसी ने गुरुजी से प्रार्थना की और गुरुजी ने काम कर दिया। लौकिक काम मांगा, तो वो भी कर दिया। ऐसा सुन कर एहसास होता है कि हमारा संबंध गुरुजी के साथ बढ़ता रहे, इसीलिए वे अपना ऐश्वर्य इस्तेमाल करते हैं, बाकी उन्हें ऐश्वर्य यूज़ करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

1991 मार्च में मैं अपनी कंपनी के काम से दिल्ली आया था और तीन दिन रुकने वाला था। 13 मार्च गुरुजी के जन्मदिन वाले दिन गुजरात लौटने वाला था। सो, इस दौरान एक दिन का समय मिला, तो मुझे हुआ कि मैं मंदिर जाकर दर्शन करके आऊं। तब ये मंदिर नहीं था, किराये की कोठी में गुरुजी रहते थे। मुझे ख्याल नहीं था कि गुरुजी का जन्मदिन है। पर, जब मैं मंदिर आया, तो पप्पाजी आये हुए थे और मुझे देखते ही पूछा—तू यहाँ कैसे आया? मैंने बताया कि कंपनी के काम से आया हूँ, तो सोचा कि गुरुजी के दर्शन करके जाऊं। पप्पाजी ने मुझसे कहा—तू रुक जा, गुरुजी का जन्मदिन है। इसके बाद हम साथ

में जाएंगे। 14 तारीख को पप्पाजी वापिस जाने वाले थे। तब गुरुजी का बहुत परिचय नहीं था। लेकिन, गुरुजी ने सकलानी साहेब जो कि रेलवे में थे, उन्हें कह कर मेरी टिकिट री-शड्युल भी करवा दी। रात को 9 बजे स्वराज एक्सप्रेस का टाइम था। देखा कि ट्रेन के कोच के अंदर तक गुरुजी आए। ट्रेन चलने का टाइम हुआ तो पप्पाजी ने उनसे कहा– आप जाओ, आप जाओ। तब गुरुजी नीचे उतर कर कम्पार्टमेंट की खिड़की के पास आए और पप्पाजी भी वहाँ आकर बैठे। दोनों के बीच में कोई वार्तालाप नहीं, क्योंकि ए.सी. कोच के कारण शीशा बंद था, तो आवाज़ जा ही नहीं सकती थी। उस दर्शन का मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। दूसरे दिन सुबह नीलम बहन, ज्योति बहन को सेकेंड क्लास में नास्ता कराने के लिए गईं, तब मैं पप्पाजी के साथ अकेला था... तो पप्पाजी ने गुरुजी के बारे में दो बातें बताईं–

...**मैं आज गुरुजी के साथ बैठा, तो उन्होंने एक बात बताई कि गुरुजी ने ताड़देव** में काकाजी से एक प्रश्न पूछा था–प्रगट स्वरूप और प्रत्यक्ष स्वरूप में क्या फ़र्क़ है? तो काकाजी ने जवाब देने के लिये, वे जहाँ बैठे थे वहीं से ज़ोर से कहा– हरखचंद। तभी किचन में काम कर रहे हरखचंदभाई काकाजी के पास आए। तब काकाजी ने बताया कि हरखचंदभाई प्रगट थे, अब प्रत्यक्ष हुए। उनका कहने का तात्पर्य यह था कि अपने प्रगट स्वरूप को प्रत्यक्ष करने की एक मन की भूमिका में चले जाना है। **जो प्रगट स्वरूप हैं, हम उन्हें प्रत्यक्ष कर लें। वही हमारी साधना है।**

दूसरी एक बात–काकाजी जब स्वधाम गए, तो ब्रह्मज्योति पर उन्हें लेकर आए। अग्निदाह की जब तैयारी हो रही थी, तभी सोनामृत के लॉन में गुरुजी ने बड़ी ज़ोर से चीख लगाई थी। मुझे अभी भी पप्पाजी की मूर्ति याद है कि इतना परभाव में आकर उन्होंने कहा कि **उस समय गुरुजी के अंदर काकाजी समा गए थे।** स्वरूपों का संबंध हमें समझ तो आता नहीं है, लेकिन ये दो बातें मेरे जीवन के लिए इम्पोर्टेंट थी, इसीलिए पप्पाजी ने मुझे बताईं। आज देखें तो पप्पाजी की कही इन बातों को 31 साल हो गये, पर सोचें कि प्रगट स्वरूप को प्रत्यक्ष करने की हमारी साधना कहाँ तक पहुँची? गुरुजी के प्रागट्य दिन पर यही प्रार्थना है कि **अंतर में हमेशा के लिए स्वरूप को प्रत्यक्ष मानने की अनुभूति हो। कभी-कभी होती है, पर हर पल-हर समय में वो रहे, ऐसी हमारी स्थिति हो जाए** ऐसी आपके चरणों में प्रार्थना।

13 मार्च , सायं– 'योगी परिवार आनंदोत्सव' में स्वरूपों का आगमन...

संतरूप में पधारे स्वयं श्री हरि, नाचो मिल-जुल थनक थन थई...

केवल मुस्कानभरी दृष्टि से जीव को ब्रह्मरूप कर दें
ऐसे मेरे गुरुदेव को बारंबार प्रणाम है...

-पू. पुनीत गोयलजी

मंच पर विराजमान स्वरूपों से एक ख़ानदानी विरासत-लेगेसी मिली है...

-पू. दीपक सेठजी

गुरुजी के जीवन में माहात्म्य व सेवा दोनों अटूट हैं...

-प.पू. रंतिकाका

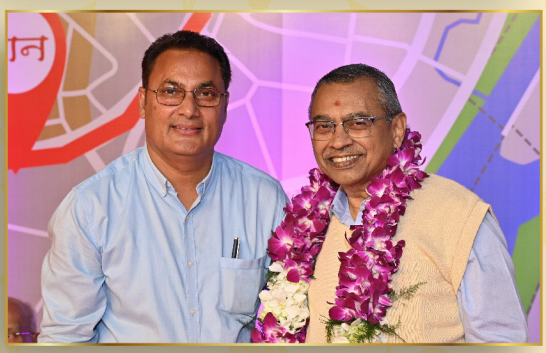

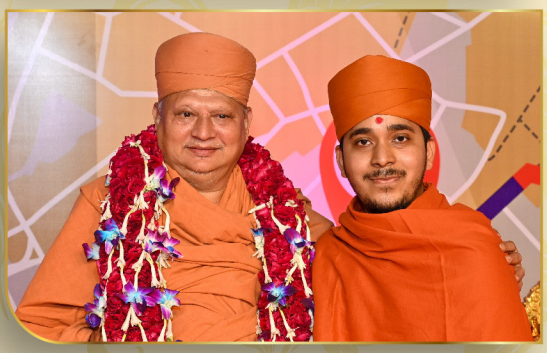

गुरुजी मेरे जैसे या छोटे बच्चों को आशिष देते हैं-दृष्टि करते हैं तो, उनके हठ, मान, ईर्ष्या टल जाते हैं...

-पू. योगीस्वामीजी

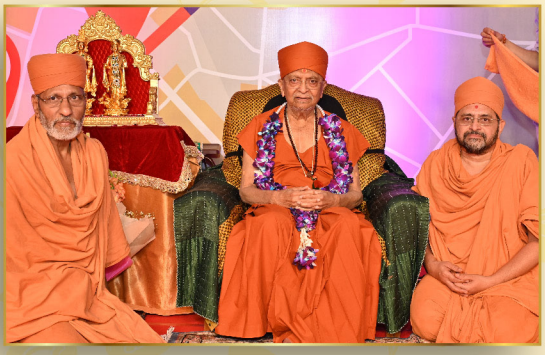

आनंदी दीदी, काकाजी-गुरुजी की प्रसन्नता का पूर्ण पात्र हैं...

-संतभगवंत साहेबजी

23:24:25:DEC2022
MISSION SADHU PARV
साधु पर्व
मनमुखी जटिल मार्ग
ी सरल मार्ग
तृष्णा
आशा
हठ
मान
MISSION SADHU PA

राज़ी तुम्हें कर पायें, अभिप्राय में जुड़ जायें...

ब्रह्मरूप हो, परब्रह्म की भक्ति हम कर पायें - साधु पर्व ऐसे मनायें...

माहात्म्ययुक्त सेवा व निर्दोषबुद्धि—ये गुरुजी ने सिद्ध किये हैं...

— प.पू. बापुस्वामी

गुरुजी से एक चीज़ सीखना, जो भी करो बेस्ट करो...

—प.पू. भरतभाई

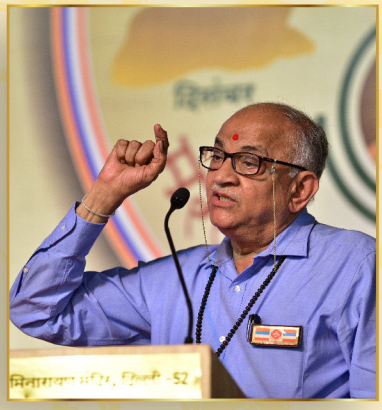

सीम्पलीसीटी इज़ धी नेइम ऑफ गुरुजी...

—प.पू. वशीभाई

13 मार्च, 2022 सायं

पू. पुनीत गोयलजी (पानीपत)

...2019 के बाद आज प.पू. गुरुजी के 85वें प्रागट्योत्सव के लिए पूरा गुणातीत समाज इकट्ठा हुआ है। हम खूब यक़ीन से मानें कि ये जो पिछले दो साल हमारे गुज़रे हैं, उसमें हमारे प्रभु भगवान स्वामिनारायण व हमारे स्वरूपों ने हमारी खूब रक्षा की है... अवर गोल्डन डेइज़ आर बैक। हम खूब विश्वास से मानें कि ये अक्षरधाम की सभा हो रही है और हमारे सभी स्वरूप काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबजी, दिनकर अंकल इस सभा में हाज़िर हैं ही... किस प्रकार? तो, मैंने काकाजी का एक सूत्र पढ़ा था—

योगीजी महाराज तो सदा दिव्य साकार प्रगट स्वरूप हैं। हम जो बातें कर रहे हैं, वे सुन रहे हैं और हाज़िर ही हैं। ये तुम्हें दिखाई नहीं देता, मगर मुझे दिखाई देता है।

मैंने यह बात पढ़ी, तो बहुत जिज्ञासा हुई कि काकाजी महाराज ने कितनी ऑथिन्टिसिटी से ये बात कही है। फिर जैसे-जैसे सत्संग में आगे बढ़े, गुरुजी और सभी स्वरूपों की परावाणी द्वारा उनके बारे में समझा, तो ख्याल पड़ा कि काकाजी, योगीजी महाराज के साथ का अपना ऐक्य बता रहे थे कि हम एक ही हैं और वे योगीजी महाराज के अखंड धारक हैं... हम सब जानते हैं कि 3 फरवरी का हमारे जीवन में क्या महत्व है। यहाँ दिल्ली में काकाजी महाराज के साक्षात्कार की जब गोल्डन ज्युबिली मनाई, तो मुझे दोबारा जिज्ञासा हुई कि काकाजी महाराज और योगीजी महाराज का कैसा संबंध था कि उन्होंने काकाजी को भगवान के दर्शन करवा दिये। हमारा नंबर तो लगेगा या नहीं लगेगा, क्या होगा? ये काकाजी और योगीजी महाराज जैसों की बात है कि उन्हें भगवान की मूर्ति की समाधि हुई। ऐसा मन में चलता था। तो, यहाँ 3 फरवरी के ही फंक्शन पर काकाजी की समाधि की परिक्रमा करते हुए मैंने खूब धुन करते हुए प्रार्थना की कि हम कैसे भी हैं, पर काकाजी जो दर्शन आपको हुआ है, वो हम सबको भी होना चाहिए। यक़ीन मानियेगा कि तभी भीतर से काकाजी ने जवाब दिया कि ये स्वामीजी, साहेबजी, गुरुजी, भरतभाई, वशीभाई—जितने स्वरूपों का तुझे दर्शन हो रहा है, ये क्या तेरा साक्षात्कार नहीं है? ये साक्षात्कार है, इनके द्वारा भगवान हमें मिले हैं। तो, आज इस सभा में विराजमान स्वरूपों का इसी भावना से दर्शन करें। ऐसी ही भावना और निष्ठा के साथ गुरुजी के 85वें बर्थडे की सभा में सभी स्वरूपों का स्वागत और खूब-खूब अभिनंदन करते हैं। साथ ही प्रार्थना कि खूब आशीर्वाद वर्षा करके जाना।

...आज 13 मार्च और साल का तीसरा महीना। नार्थ इंडिया में हिन्दी की एक कहावत है—न 3 में न 13 में। पर, हमारा तो बेड़ा ही पार 3 और 13 ने किया है। आज 3 (काकाजी) और 13 (गुरुजी) हमारे जीवन में नहीं होते, तो हम कहाँ होते? मोस्टली सब चमत्कार को नमस्कार करते हैं। सो, हमारे जीवन में सबसे पहला चमत्कार तो ये है कि हम ये बातें कह पा रहे हैं, समझ पा रहे हैं वही सबसे बड़ा चमत्कार है। वर्ना ये बातें हमारे समझ से परे की हैं। गुरुजी हमारे जीवन में आए-हमारी परवरिश की, इससे बड़ा चमत्कार क्या देखना है?

...कोरोना के कारण सब लोग चिंता में थे कि ये क्या महामारी आ गई, सब कुछ बंद हो गया। तो सबको बल में रखने के लिए, सूझ देने के लिए पवई मंदिर में प.पू. भरतभाई व प.पू. वशीभाई की निश्रा में वेबीनार हुआ। उसमें इंडिया और इंटरनेशनल सब लोग जुड़े थे। गुरुजी ने भी आशीर्वाद मैसेज रिकार्ड करके भेजा था। उसमें गुरुजी ने कहा—**'एक नये युग का आरंभ हो रहा है...'** जब मैंने यह बात सुनी, तो मैंने सोचा कि गुरुजी ने ये क्या बात कही कि एक नये युग का आरंभ हो रहा है, जबकि यहाँ तो सारी दुनिया ही बंद पड़ी है। लेकिन, गुरुजी से ही सीखा है कि काकाजी का या किसी स्वरूप का कोई लेटर या परावाणी हो, तो गुरुजी उसकी गहराई में जाकर सोचते हैं कि क्या कहना चाहते हैं? यही बात मैंने दीदी के जीवन में देखी है कि गुरुजी के मुंह से कोई बात निकलती है, तो वे यही सोचती हैं कि गुरुजी क्या कहना-समझाना चाहते हैं। सो, जैसे-जैसे टाइम निकला तो महसूस हुआ कि वाक़ई ये दुनिया जैसे रुक गई है, वो भी हमारे लिए गोल्डन ओपोच्युनीटी है... हम लोग अपनी रुटीन लाइफ में इतने व्यस्त रहते हैं कि अंर्तदृष्टि और भजन करने का समय नहीं निकाल पाते। पर, इसके द्वारा महाराज ने हमें मौका दिया और एहसास कराया कि हमारे अंदर के युग का परिवर्तन हो रहा है...

गुरुजी के संपर्क में आ चुका था, तब मैंने एक जगह पढ़ा कि गुरु की पहचान कैसे हो? तो—**गुरु के गुरु कैसे थे, वो देखो। गुरु के द्वारा तैयार किया हुआ समाज कैसा है, वो देखो। गुरु का वर्तन देखो।**

पढ़ कर मुझे एहसास हुआ कि मैंने तो मांगा नहीं था, तब भी ये लॉटरी कहाँ से लग गई? गुरु के गुरु के बारे में कुछ बात करने जैसी नहीं है, उनकी महिमा हम क्या गाएँ?

गुरु के द्वारा तैयार किये गये समाज की बात करूं, तो गुरुजी का समाज देख कर ऐसा लगा कि वाक़ई ये कुछ अलग है।

फिर गुरु का वर्तन मुझे धीरे-धीरे समझ में आया। अंर्तमन ने कहा कि हम

वचनामृत और स्वामी की बातें कब समझेंगे? उसे समझने के लिये तो ये जिंदगी कम पड़ जाएगी। तो क्या किया जाए? बस, काकाजी का फार्मुला अपनाया कि धुन करो, महाराज क्या सुझाते हैं फिर देखते हैं। सो, अंदर से महाराज ने जवाब दिया कि केवल गुरुजी का दर्शन कर, तुझे और कुछ सीखना नहीं है। तुझे उनमें से सब सीखने को मिल जाएगा। हम दिल की सच्चाई से सोचें, तो गुरुजी के वर्तन से सब सीखने को मिलता है। वैसे तो आप हर पल हमारे लिए ही जीवन जीते हैं, लेकिन आज के शुभ दिन आप लुटाने के लिये ही बैठे हैं। तो, हे गुरुजी! जैसे आपने काकाजी महाराज का सेवन किया वैसे ही हम वाणी, वर्तन और विचार से आपकी शोभा बढ़ा सकें...

आज कुछ भावना में बह जाने का भी दिल करता है। गुरुजी को जो कुछ थोड़ा बहुत समझ पाए हैं, उसे कुछ पंक्तियों में कहने की कोशिश है—

'श्रीजी जिनके पिता हैं, गुणातीतानंद मां हैं।
काकाजी का वो धाम हैं, मुकुंद उनका नाम है।।
ऐसे मेरे गुरुदेव को कोटि-कोटि प्रणाम है...

सामर्थ्य आपका ऐसा कि गरजू बन कर बुलाते
ढोकला, उंधिया खिला कर, कभी पंजाब, कभी गुजरात घुमाकर
अपने सान्निध्य का आनंद लुटाकर,
केवल मुस्कानभरी दृष्टि से ही जीव को ब्रह्मरुप कर दें
ऐसे मेरे गुरुदेव को बारंबार प्रणाम है...

कभी वो पिता हैं, तो कभी वो मां हैं
कभी वो सखा हैं, तो कभी वो मुरलीधर श्याम हैं
माखन भले ही चुराते न हों, पर हमारा दिल तो आपने चुराया है
हे गुरुजी! भक्तों को आपका यही अंदाज तो खूब भाया है
राम सेतु बना कर बाण भले ही चलाये न हों,
पर धुन करना तो सिखाया है,
एकता वही एकांतिकभाव यही ब्रह्मास्त्र आपने चलाया है
हे गुरुजी, सर्वदेशीयता व गुरुभक्ति की आप टॉप मिसाल हो
आपकी साधुता ने ही तो ये समाज रचाया है...

हमारे हठ-मान-ईर्ष्या जैसे स्वभावों की मंडी में भी
आपने हमारे हृदय में प्रभु को बसाया है

मेरी तो आंखें बंद हैं, वर्ना प्रभु ने तो
बार-बार आपके स्वरूप का दर्शन कराया है।
तो आओ संतों, आओ बहनों, आओ मुक्तों
हम सब मिल कर गुरुभक्ति अदा करें
हमारे प्यारे-प्यारे गुरुजी का 85वां जन्मदिन आया है
हे गुरुजी, आपने हमारे हृदय में प्रभु को बसाया है।
आपको कोटि-कोटि वंदन, धन्यवाद।'

हैप्पी बर्थडे गुरुजी, हैप्पी बर्थडे गुरुजी
वी आल लव यू, वी आल लव यू, वी आल लव यू
लांग लीव गुरुजी, लांग लीव गुरुजी, लांग लीव गुरुजी...

प.पू. बापुस्वामीजी (सांकरदा)

...पप्पाजी-काकाजी बहुत बार कहते थे और अभी पुनीतजी ने भी बताया कि ये अक्षरधाम की सभा है। जहाँ पर भगवान और भगवान के भक्त के माहात्म्य की बातें होती हैं और पंचविषय व देहाभिमान के खंडन की बात होती है, वहाँ अक्षरधाम का मध्य है। आज तो गुरुजी के माहात्म्य दर्शन का अवसर है। गुरुजी के संकल्प से सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के अखंड धारक दिव्य स्वरूपों का दर्शन एक साथ हुआ। दिल्ली के माहात्म्य युक्त समाज का दर्शन करके हम सब लोग धन्य हुए। योगीजी महाराज की कृपा से गुरुजी का पहला दर्शन 1963 में हुआ था। योगीजी महाराज, काका-पप्पा-बा की कृपा से1964 में गुरुजी के साथ अक्षरभुवन में रहने का हमें अवसर प्राप्त हुआ। उस समय गुरुजी खूब दौड़ा-दौड़ी करते थे और बहुत आनंद कराते थे। अक्षरविहारीस्वामी, पुरुषोत्तमचरणस्वामी और कोठारीस्वामीजी के साथ मिलकर काकाजी के मंडल वाले सब बहुत आत्मीयता से रहते थे। हम जब नये-नये संत बने, तब **काकाजी ने हमें सिखाया था कि स्वरूपयोग रोज़ करना।** तो, शाम को चेष्टा वगैरह कार्यक्रम पूरा होने के बाद अक्षरविहारीस्वामीजी साढ़े नौ-दस बजे के करीब स्वरूपयोग कराते थे। योगीजी महाराज वगैरह के माहात्म्य की बातें करते थे और माहात्म्य युक्त सेवा करने का निर्देश देते थे... अक्षरभुवन से विमुख होने के बाद ताड़देव में रहने आये। फिर सांकरदा, हरिधाम और माणावदर रहना हुआ। 1969 में काकाजी-पप्पाजी की आज्ञा से दिल्ली का प्रोग्राम बना। गुरुजी के साथ विज्ञानस्वामी, निष्कामजीवनस्वामी और वजुभाई कभी-कभी आते थे। मैं 1973 में गुरुजी के साथ सेवा में दिल्ली आया। मेरे साथ नये-नये बने

संत प्रबोधस्वामी और भक्तिवल्लभस्वामी भी थे। हमारी किचन में 3 डिब्बे, 1-2 बर्नर का छोटा चूल्हा और एक गैस सिलेंडर था। तब साधु समाज में हम 5-6 संत व सेवक ठहरते थे...

कभी-कभी कोई भक्त साधु समाज में आते थे। हफ्ते में एक-दो बार छोटी सभा और महापूजा करते थे... गुरुजी से बहुत सीखने को मिला है... जब हमने दीक्षा ली थी, तब योगीजी महाराज ने कहा था— *पात्र भी मैं घढ़ूंगा और ब्रह्मरस भी मैं भरुंगा।*

योगीजी महाराज ने बताया था— *कृष्णजी अदा के पास से मैं जब शास्त्रीजी महाराज के पास आया, तब से शास्त्रीजी महाराज के अल्प संबंध वालों में भी मैं उन्हीं को देखता हूँ।*

पप्पाजी कहते थे— *शांति और सभी सुख के दो ही साधन हैं— माहात्म्य युक्त सेवा व निर्दोषबुद्धि।*

ये दो साधन गुरुजी ने अपने जीवन में सिद्ध किये हैं। काकाजी के वचन और उनकी मूर्ति के सिवा गुरुजी ने अपने जीवन में कुछ रखा नहीं है। गुरुजी को तकलीफें नहीं हुई ऐसा नहीं है, पर उन्होंने आसानी से पार कर लीं और काकाजी, पप्पाजी व सभी गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता के पात्र बन गये। **गुरुजी ने अल्प संबंध वालों के प्रति परिवार जैसी आत्मबुद्धि और प्रीति रखी, खूब महिमा समझी है व सबकी माहात्म्य युक्त सेवा करते हैं।** गुरुजी को 19-20 नहीं चलता, तो भक्तों के लिए भी वो नहीं चलाते हैं। यहाँ कोई भी आता है, तो उसके ठहरने की, भोजन-प्रसाद की व्यवस्था खुद देखते हैं कि किसी को कोई तकलीफ़ नहीं होनी चाहिए। सबके प्रति स्वरूपों जैसी दृष्टि। बस, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और स्वामिनारायण के संबंध वाला है न।

कन्स्ट्रक्शन की सेवा के लिये मैं जब यहाँ रहा था, तब हरिप्रसादस्वामीजी के संबंध वाले एक पेशेन्ट तीन महीने दिल्ली रहे, उन्हें अपना ही समझ कर गुरुजी ने सेवा करी थी।

योगी परिवार में काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और गुणातीत स्वरूपों का माहात्म्य समझ कर, गुणातीत समाज के मुक्तों की निर्दोषबुद्धि व माहात्म्यभाव से गुरुजी सेवा करते रहते हैं... गुरुजी आपने तो बहुत कृपा की है। **'अक्षर का तीर्थ'** पुस्तक में 122 नं. पेज पर पप्पाजी ने सभी गुणातीत स्वरूपों का दर्शन कराया है और उसमें गुरुजी के बारे में लिखा है कि दिल्ली के सभी भक्त गुरुजी को गुणातीत स्वरूप-काकाजी का स्वरूप-अक्षरपुरुषोत्तम का स्वरूप मानें। यदि ऐसा मानेंगे, तभी उनकी प्रगति होगी... **पप्पाजी** यही कहते हैं कि **जो जिस स्वरूप का आश्रित है, उसे ही अक्षरपुरुषोत्तम का स्वरूप मान कर भक्ति, सेवा और वचन का पालन करना चाहिये।** हमारे जीवन में ये सभी गुणातीत स्वरूपों ने माहात्म्य युक्त सेवा का सिंचन किया है, तो उसी

पथ पर हम चलते रहें। गुरुजी के दिल में योगी परिवार का जो माहात्म्य है, ऐसे हम भी उनके पीछे-पीछे चलें...

पू. योगीस्वामीजी (हरिधाम)

...लगभग 45-46 साल पहले जब गुरुजी के पास ए-103 में स्वामीजी ने मुझे सेवा में भेजा था, तब 13 मार्च का दिन नज़दीक आ रहा था।

मैंने गुरुजी से पूछा—*आपका प्रागट्य दिन आ रहा है, वो हम मनाएं ऐसी आप सम्मति दो।*

गुरुजी ने मुझसे कहा—*अभी कोई भक्त तो हैं नहीं, फिर तुम क्या मनाने की बात करते हो?*

मैंने कहा—*नवीनभाई, बच्छराजजी, जनार्दनभाई, पकाई साहेब, नवलबा और चंद्रकांतभाई, पप्पाजी के हेत वाली श्रीकांताबेन जैसे 5-10 भक्त तो आएंगे न!*

तब गुरुजी ने कहा—*अभी कुछ मनाने की ज़रूरत नहीं है।*

फिर भी दो-तीन दिन पहले मैंने गुरुजी से पूछा—*अगर आपका प्राकट्य दिन मनाना होगा, तो मैं क्या बात करूँ?*

तब गुरुजी ने अपना एक प्रसंग बताया— *जब मैं अक्षरभुवन में था, तब एक बार महंतस्वामी के पास डायरी लेकर गया था और उनसे डायरी में आशीर्वाद लिखने के लिये कहा। महंतस्वामी ने बात सुनी और मेरे सामने देखा ही नहीं। मुझे लगा कि उन्होंने बात अनसुनी कर दी। लगभग आधे घंटे उनके पास बैठा रहा। महंतस्वामीजी से दोबारा कहा कि इस डायरी में आशीर्वाद लिख दो। तब महंतस्वामीजी ने कहा कि मैं बाद में लिख दूँगा। चार-पांच दिन के बाद फिर महंतस्वामीजी के पास पेन भी लेकर गया कि अगर उनके पास नहीं होगा, तो मैं तुरंत दे दूँगा। फिर भी महंतस्वामीजी ने आशीर्वाद नहीं लिखे... 3-4 बार ऐसा हुआ, तो महंतस्वामीजी ने कहा कि मुकुंदजीवन मैं इसमें कुछ भी लिखूं, तो तुम पुरुषोत्तमचरणदास, कृष्णचरणदास, उपेन्द्रदास सभी को दिखाओगे कि महंतस्वामी ने मुझे आशीर्वाद लिख कर दिया है। उससे आपका मान बढ़ेगा, इसीलिए मैं नहीं लिख रहा। तब मैंने महंतस्वामी से कहा कि यह बात तो मुझे सोचनी है। महंतस्वामी ने कहा कि तुम नहीं सोचते हो, इसलिए तो मैं सोचता हूँ।*

ये तो अक्षरभुवन की बात है। आज स्टेज पर लिखा है—हठ, मान, ईर्ष्या। **तो, गुरुजी जब अक्षरभुवन में थे, तभी से उन्हें पता था कि हठ, मान, ईर्ष्या और क्रोध क्या है? आशा-तृष्णा क्या है? अब तो गुरुजी मेरे जैसे या छोटे-छोटे बच्चों को आशीष देते हैं या उन पर दृष्टि करते हैं, तो उनके हठ, मान, ईर्ष्या सब निकल जाते हैं। काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी ने ऐसा आशीर्वाद उन्हें दिया है।**

क्या आशीर्वाद दिया है, वो बताता हूँ– *काकाजी जब हरिधाम आते थे, तब सभी संत उनके पास बैठ कर कथावार्ता सुनते। एक बार सुबह काकाजी ठाकुरजी के दर्शन करने के लिए गए, तो कोठारीस्वामीजी और गुरुजी उनके साथ थे। दर्शन करके नीचे उतरे, तब मंदिर की सीढ़ियों पर खड़े रह कर काकाजी ने बताया कि ये आकाश का सूर्य, मैं एक सूर्य और गुरुजी की छाती पर हाथ फिरा कर कहा कि आप भी सूर्य, दूसरी बार काकाजी ने कोठारीस्वामी की छाती पर हाथ घुमा कर यही कहा और कहा–जाओ, आज से तीनों एक राजा।*

इस बात से पता चलता है कि गुरुजी और कोठारीस्वामीजी ने काकाजी का कैसा आशीर्वाद पाया है।

काकाजी ने मन ही मन अक्षरधाम जाने का निर्णय ले लिया था। उससे पहले जब वे हरिधाम आए, तब उन्होंने बताया कि योगीजी महाराज ने जिन संतों को दीक्षा दी है, उन सभी के लिये माथेरान में शिविर करनी है। इस हेतु सांकरदा के संतों को उन्होंने एक पत्र लिखा। मैंने और घनश्यामस्वामी ने काकाजी से कहा कि गुरुजी को पत्र नहीं लिखना है? काकाजी ने कहा कि में गुरुजी को दिल्ली फोन कर दूँगा, तो वे आ जाएंगे। फिर हम सभी संत 6 मार्च को पहुँच गये थे। उसी दिन काकाजी की तबियत ठीक नहीं थी, तो शाम को उन्हें भाटिया अस्पताल में एडमिट किया। अगले दिन 7 तारीख को समाचार सुना कि काकाजी अक्षरधाम चले गए। तब गुरुजी दिल्ली से ट्रेन में मुंबई के लिये रवाना हुए। ट्रेन में एनाउंसमेंट हुई कि काकाजी को अग्नि संस्कार के लिये मोगरी-अनुपम मिशन लाया जा रहा है। वहाँ जाने से पहले काकाजी को हरिधाम लाना है। तो, स्टेशन से गुरुजी हरिधाम आए। तब कोठारीस्वामीजी ने मुझे बताया कि कल काकाजी की अंतिम विधि है, तो उसके लिये हमें चंदन की लकड़ी ले जानी है। लगभग 12-15 किलो चंदन की लकड़ी ले गए थे। मेरे मन में जो चोरी थी, वह अभी बता रहा हूँ। तब कोठारीस्वामी ने मुझसे पूछा था कि चंदन की लकड़ी आ गई, तब मैंने उन्हें 'हाँ' कह कर सारी दिखा दी थी। लेकिन, उसमें से दो लकड़ी मैंने अपने पास रख ली थीं। बाद में कोठारीस्वामीजी और गुरुजी जब साथ में ही खड़े थे, तो मैंने दोनों को वह काकाजी को अर्पण करने के लिये दी। दोनों ने एक साथ काकाजी को अर्पण की थी। अंत्येष्टि के बाद सब हरिधाम आए। तब ट्रेन का रिजर्वेशन न होने के कारण गुरुजी को एक दिन और रुकना पड़ा। फिर जब गुरुजी जाने वाले थे, तब **हरिप्रसादस्वामीजी** रेलवे स्टेशन पर उन्हें छोड़ने गये और कहा–

जैसे ***मैं कोठारीस्वामीजी के साथ अखंड हूँ, वैसे मुकुंदजीवन आपके साथ भी अखंड रहूँगा।***

इससे पता चलता है कि काकाजी-स्वामीजी का गुरुजी के साथ कैसा

संबंध था? कोठारीस्वामीजी और गुरुजी के प्रति मुझे जो माहात्म्य है, वो यही है कि गुणातीत ज्योत की बहनों ने कई सालों पहले एक भजन बनाया था–

'रोमे-रोमे ऋण छे तारुं, चुकव्युं न चूकवाय...'

एक बात और है कि जब भी स्वामीजी मुझे दिल्ली गुरुजी की सेवा में भेजते थे, तो कहते थे– *योगी, ख़ास ध्यान रखना कि गुरुजी को किसी बात की तकलीफ़ न हो।* मुझे भी ऐसा था कि स्वामीजी को प्रसन्न करना ही है। उस दौरान काकाजी एक दिन या दो दिन के लिए दिल्ली आते थे। रात को साढ़े बारह-एक बजे नींद का त्याग कर, वे वचनामृत, स्वामी की बातें पढ़ते रहते थे और कई बार आँखें बंद करके भगवान की मूर्ति की स्मृति भी करते थे। तब सुबह गुरुजी मुझे जगाते थे। दिल्ली से जाने के 5-6 दिन के बाद, दासस्वामी जहाँ संस्कृत की पढ़ाई करते थे, वहाँ उनके साथ मुझे जोड़ में जाना था। मुझे मन में हुआ कि दिल्ली में गुरुजी मुझे जगाते थे, पर यहाँ मुझे कौन जगाएगा? पहले दिन अपने आप उठने की कोशिश की, मगर उठ नहीं पाया। इस बात का मुझे बहुत दर्द हुआ और उदास होकर मैं काकाजी के कमरे में गया। वहाँ अपने आप प्रार्थना हो गई। तब से लेकर जब तक काकाजी अक्षरधाम गए, ऐसा दिन मेरे जीवन में नहीं आया कि काकाजी जहाँ भी हों, वहाँ मैं रात को दर्शन करने ना गया हूँ। काकाजी की वो आशीष और दर्शन के लिए मैं गुरुजी का आभारी हूँ...

प.भ. दीपक सेठजी (दिल्ली)

...2021 पिछले साल गुरुजी के बर्थडे वाले दिन हंसा दीदी ने आनंदी दीदी से कहा था कि गुरुजी का जन्मदिन 13 तारीख को होता है, तो ये सबको तारने आए हैं, सबका उद्धार करने आए हैं। हमारी और संतों की सोच में यही फ़र्क़ है। भगवद्स्वरूप संतों की शरण में आने से लाइफ की परिभाषाएँ बदल जाती हैं...

1967 में गुरुजी दिल्ली आए... 23 साल अपने परिवार के साथ बिताये और एक साधु होते हुए 62 साल से उन्होंने कितना परिश्रम किया? कितने लोगों का कल्याण किया? और आज भी कर रहे हैं। दिल्ली का बहुत बड़ा सौभाग्य है और दिल्ली में भी अशोक विहार का बहुत ही बड़ा सौभाग्य है। हम सबके लिए भगवान की ये एक देन है, इसलिये मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझता हूँ... **मैं जब गुरुजी को और उनका डिसीप्लीन देखता हूँ, तो बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हमारे गुरुजी में बहुत आकर्षण है...**

इतना बड़ा दिव्य परिवार-कुटुंब है। उस कुटुंब के **छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक की बीमारी, किसी की नौकरी की परवाह करने के साथ-साथ, वे सबके**

अंदर भगवान बसाना चाहते हैं। जो बहुत बड़ी बात है और उसी के लिए वे परिश्रम करते आ रहे हैं। गुरुजी और इस मंच पर विराजमान भगवद्स्वरूप संतों का दर्शन करके सोचता हूँ कि इनके मास्टर काकाजी महाराज क्या हस्ती थे? 1950 में लंडन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स में पढ़े थे। वो आज भी दुनिया की वन ऑफ धी बेस्ट यूनीवर्सिटी है। आज से करीब 75 साल पहले उन्होंने अफ्रीका, लंडन, फ्रांस, जगरांव, सवद्दी, दिल्ली, गुजरात, बॉम्बे में इतना सत्संग फैलाया... उनके प्रसंग सुने हैं कि फॉरेन में भक्तों के घर वे कैसे रहते थे! भक्तों को वे नौकरी पर जाने के लिये कहते और उनका घर व बच्चे खुद संभालते। उनके स्टूडेंट **गुरुजी, भरतभाई, वशीभाई, और मंच पर विराजमान सभी स्वरूपों द्वारा एक ख़ानदानी विरासत-एक लेगेसी मिली है।** जैसे हम किसी को देखकर कहते हैं या कोई परिचय देता है कि ये इंसान तो ख़ानदानी रईस है। सिर्फ पैसे-शोहरत या ओहदे से उसे ऐसा कहा जाता है। लेकिन हमें जो ख़ानदानी मिली है, उस पर बहुत गर्व है और हमें इसकी स्मृति हमेशा करनी चाहिए। मैं इस चीज़ को **कभी ना भूलूं कि मैं किस ख़ानदान में आया हूँ और मेरे बाप-दादा कौन हैं?** वे मुझे क्या सिखाना और बनाना चाहते हैं। मैं वैसा बन सकूं, चल सकूं और **मुझसे ऐसी कोई भूल ना हो, जिससे मेरे इस ख़ानदान का, मेरे बाप-दादाओं का नाम ख़राब हो।** गुरुजी के चरणों में यही प्रार्थना है कि हम कभी ना भूलें कि हमें क्या प्राप्ति हुई है? इसी ध्यान और स्मृति में चौबीस घंटे रहें, भजन करें और आपको अंतर से राज़ी कर सकें। हमारी वज़ह से कभी भी आपको नीचा ना देखना पड़े और हम सब एक परिवार की तरह मिल-जुलकर रह पाएं...

प.भ. श्यामजाजु (दिल्ली)

...कोरोना के कारण पिछले साल इस प्रकार का कार्यक्रम हो नहीं सका। हम सबको एक कमरे में बंद कर दिया और हमारे मुंह पर मास्क लगा दिया।

भारत जैसे इतनी बड़ी जनसंख्या वाले देश में धार्मिक आस्था, श्रद्धा, पवित्रता और गुरुजी की सीख पर जो हमारा भरोसा है, उसके कारण हम सब इस संकट से बाहर आए हैं। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी पूरे देश का नेतृत्व कर रहे हैं, उन्होंने बता दिया कि धार्मिक आस्था को कम नहीं समझना। आदमी के जीवन में सुख-दुःख तो आता है। पर, जो संत यहाँ पर बैठे हैं, उन्हें जीवन में कोई स्वार्थ नहीं है। इन्होंने इस समाज के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। कोई व्यक्तिगत एजेंडा नहीं है। ऐसे लोग जब कोई सीख देते हैं, तो हमारे जीवन में उसका परिणाम आता है। वर्ना बहुत ज़्यादा पढ़ लो, **व्यक्तिगत जीवन में बहुत ज़्यादा ऊंचाई पर पहुँच जाओ, पर वो आदमी जो बोलता है उसका असर नहीं होता। असर उसका होता है, जिसका जीवन**

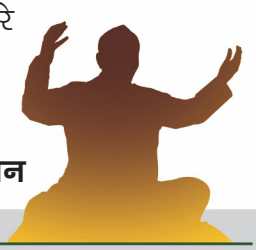

उसके अनुरूप है। इसलिए गुरुजी का 85वां प्रागट्योत्सव आनंदोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। हम सब लोग अपने जीवन में जो श्रद्धा-आस्था रखते हैं, उसकी धार्मिकता को प्रोत्साहन देने वाली सरकार आज कार्यरत है...

प.पू. वशीभाई (पवई)

...**गुरुजी के विज़न, कौटुम्बिक संबंधों और जीवन भावना में जो स्पीरीच्युआलिटी झलकती है, वो बिलकुल नेचरल-सहज, लेकिन फिर भी डिवाइन है**... यहाँ हम अपना अस्तित्व भूल कर ऑटोमेटिक नेचरल समाधि में रहते हैं...

आज की थीम में लिखा है—**'गुरुमुखी का सरल मार्ग और मनमुखी का जटिल मार्ग।'** किसी भी कम्प्लेक्स से कम्प्लेक्स चीज़ को सिम्पल कर देना ही गुरुजी की महानता है। वेद-वेदांत उपनिषद-ब्रह्मसूत्र के सार वचनामृत प्रथम के 54 में महाराज ने एक ही स्क्रीप्ट में एकदम सहज बता दिया कि संत मोक्ष का द्वार हैं। **धीस सीम्पलीसीटी इज़ पावर एन्ड सीम्पलीसीटी इज़ धी नेइम ऑफ गुरुजी।** उन्हें बहुत बड़ा-बड़ा पसंद नहीं है। **सीम्पलीसीटी से पूरी दुनिया को एक संदेश देते हैं।**

...काकाजी-गुरुजी का स्टाइल देखकर महाराज की सहज याद आती है कि वे भी ऐसा ही करते थे। अमृतसर से सुनिता बहनजी आई हैं। वे किस प्रकार सत्संग से जुड़ीं वो सारा प्रसंग सुना। जब भिंडरावाला केस हुआ, तब उनके हसबंड को ऑन ड्यूटी गोली लगी थी, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। तब न्यूज़ पेपर में सुनीताजी का स्टेटमेन्ट आया था कि जब उनसे पूछा गया कि अगर वो टेररिस्ट आपको मिल जाए, तो आप उसका क्या करोगी-उससे क्या कहोगी? उन्होंने कहा कि अगर वो सच्चे दिल से मांफी मांग कर बोले कि मैं अब किसी को भी गोली नहीं मारूंगा; कभी बंदूक नहीं उठाऊंगा, तो मैं उसे राखी बाँधूंगी।

देखो, भगवान भी उनका ये भाव देखते होंगे। तो, किसी भी तरह उन्हें काकाजी के सत्संग का जोग हो गया। सत्संग में आने से पहले सुनीताजी ने मोरारी बापु की कथा में सुना होगा कि जब तुम्हारे जीवन में कोई संत आए और तब तुम्हारी बायी बाँह और बायीं आँख फड़के व आंखों में आँसू आएँ, तो मानना कि वो सच्चे संत हैं। तो, अमृतसर जाने से पहले काकाजी ने एक रात सपने में गुरुजी को दर्शन देकर कहा—मुकुंद तू जा। अमृतसर में एक बहन तुम्हारी राह देख रही है। जब गुरुजी अमृतसर गए, तो उनका दर्शन करके सुनीताजी की बायी बाँह, आँख फड़की और आँखों से आँसू बहने लगे। तब जैसे महाराज ने लोया 3 में निष्ठा का वर्णन किया है, वैसा निश्चय उन्हें हो गया और आज 20-25 साल से उन्हें ऐसी निष्ठा है। काकाजी कहते कि निष्ठा वाले का सारा व्यवहार भगवान संभालते

हैं। सुनीता बहन विधवा हैं, उनके दो बेटे और एक बेटी है। वो बताती हैं कि उनकी बेटी को ऐसा हसबंड मिला है कि वो कहता है कि उनके यहाँ 400 जने आयें, तो भी कोई हरज़ा नहीं, इतना बड़ा घर है। कहने का तात्पर्य यह है कि महाराज के समय में जैसा होता था, वैसा ही काकाजी की बातों में दिखता था।

हमारे सत्संग में दासस्वामीजी के मामा थे, जिन्हें सब फड़िया मामा कहते थे। ब्रह्म-परब्रह्म, ब्रह्मनिरूपण जैसे कम्प्लेक्स शब्द का मतलब पूछने के लिए काकाजी हमें उनके पास भेजते थे। एक बार फड़िया मामा ने काकाजी से पूछा कि ब्रह्म क्या? उसका लक्षण क्या? गुरुजी वहीं बैठे थे, तो काकाजी ने गुरुजी से पूछा कि ब्रह्म का लक्षण क्या? गुरुजी तो बहुत स्मार्ट हैं। महाराज के पास जैसे परमहंस दो हाथ जोड़ कर बैठते थे, ऐसे ही वे बैठे थे। तो, काकाजी ने बताया कि सहज में आनंद हो जाये, तो समझना कि वहाँ ब्रह्म तत्त्व प्रगट है। तीन दिन से हम यहाँ सहज ही छोटी-छोटी बातों जैसे जाना-आना, उठना-बैठना, खाना और गुरुजी की कथा सुनने में आनंद महसूस कर रहे हैं। कल वीरेनभाई ने बताया था कि भले खाली बैठे रहो, तो भी आनंद मिलता है...

महाराज के समय में एक सामंत पटेल थे। महाराज ने उनसे पूछा कि तेरा व्यवहार कैसा चल रहा है? वह बोला—महाराज, अच्छा है। हम तो किसान हैं, हमें कोई तकलीफ़ नहीं है। महाराज ने दो-तीन बार पूछा। तब उसने एक भगवदी (भगत) से पूछा कि महाराज बार-बार ऐसा क्यों पूछ रहे हैं? उसने बताया कि महाराज गोपीनाथजी का मंदिर बनवा रहे हैं और मज़दूरों को मज़दूरी देने के लिए पैसा नहीं है, इसलिए महाराज पूछ रहे हैं। यह सुन कर वह तुरंत ही घर गया और ज़मीन-ज़ायदाद बेच कर सारा रूपया लाकर महाराज के पास रख दिया। महाराज समझ गए और पूछा कि तेरी तो इतनी औकात नहीं है, तो तू इतना पैसा कहाँ से लाया? दो-तीन बार पूछने के बाद उसने जवाब दिया कि मुझे ज़मीन की अभी आवश्यकता नहीं थी, इसलिए बेच दी। अब ज़मीन ही नहीं; तो फिर बैल और उसके चारे की भी ज़रूरत नहीं, सो सब बेच कर गोपीनाथदेवजी के मंदिर के लिए सेवा लाया हूँ। सब सुन कर महाराज की आँखों में आंसू आ गये। भक्त ऐसा होना चाहिए कि जिसे देखकर भगवान की आँखों में आंसू आ जाएं। यहाँ सब भक्तों को देखते हैं, तो हमारी आंखों में आंसू आ जाते हैं कि वाह, क्या डेडीकेशन है?

...आप सत्संग में डेडीकेशन करते हो, जितनी आज्ञा पल सके उतनी पाल सकते हो। पर, संत अगर कोई ऐसी आज्ञा दें कि जो तुम्हें अपने बस से बाहर लगती हो और तब भी उसकी आज्ञा का पालन करो, तो भगवान आपका सबसे बड़ा काम करते हैं। यह मैंने ओ.पी. अग्रवाल के जीवन में देखा है। गुरुजी ने उन्हें कहा कि आप पुरी साहेब के बेटे आशिष से अपनी बेटी प्रियंका की शादी कर दो। तो, उन्होंने

बेझिझक अपने सब रीति-रिवाज छोड़ कर शादी कर दी। आज हम सब जानते हैं कि **पुरी साहेब, राकेशभाई और ओ.पी. जी का क्या डेडीकेशन है!** मैं ये कहना चाहता था कि प्रथम के 71 में महाराज ने लिखा है कि वे धाम, धामी और मुक्तों को लेकर आये हैं, मगर वो दिखाई नहीं देते हैं। पर, जैसे **डॉक्टर कैलाश सिंह ने कोविड के समय में आउट ऑफ धी वे जाकर आनंदी दीदी की हार्ट सर्जरी कराई।** ऐसे भक्तों के नाम शास्त्र में लिखे जाते हैं। गुरुजी ने यहाँ ऐसे बहुत सारे तैयार किये हैं। किसका नाम लें और किसे छोड़ें। काकाजी के समय में भी कई छोटे-छोटे भगत आते थे, जिनकी कोई हैसियत नहीं होती थी, पर काकाजी ने उन्हें चांदला करके, लीला करके, आशीर्वाद देकर निहाल कर दिया। एक जे.सी. भाई स्टील वाले आते थे। उनकी यह भावना थी कि मौसम का पहला आम आये, वो मैं काकाजी के लिये लेकर आऊँगा। पर, काकाजी तो मार्च में धाम में चले गये, वो उन्हें पता नहीं था। वे आम लेकर ताड़देव आये और पता चला, तो भरतभाई के सामने रो पड़े कि अब मैं ये किसको दूँ? उसी दिन काकाजी उनके सपने में आए, तो उन्होंने काकाजी से पूछा कि मैं आज आम लेकर आया था, तो आप कहाँ थे? काकाजी ने कहा कि मैं तो यहीं हूँ, मैं कहाँ गया हूँ? उन्होंने कहा कि विद्यानगर में आपका अग्नि संस्कार किया था, वगैरह... काकाजी बोले– वो सब नट की माया जैसा है, मैं तो अखंड हूँ। तो महाराज के प्रगट रहने की बात पल-पल सिद्ध होती है।

वचनामृत गढडा प्रथम के 71 में महाराज ने कहा है कि गुणातीतानंदस्वामी और मुक्तों को वे अपने साथ लाये थे...1830 की 22 फरवरी को बोम्बे के गर्वनर सर जॉन मॅल्कम से महाराज को मिलना था। उस समय महाराज की तबियत ऐसी नादुरुस्त थी कि जाने की कोई गुंजाइश नहीं थी। जॉन मॅल्कम ने खत लिखा कि मैं आपसे मिलने आता हूँ। लेकिन, महाराज ने कहा–नहीं, आपके ओहदे का मान रखते हुए मैं आपके पास आता हूँ। देखो, महाराज हमें कैसी सीख देते हैं। महाराज खुद राजकोट गए और कोई लौकिक वस्तु न देकर उन्हें अपना शास्त्र–शिक्षापत्री दी, जो आज भी ऑक्सफोर्ड लाइब्रेरी में मौजूद है। इसी प्रकार, यहाँ कोई आता है, तो गुरुजी वैसी ही पद्धति अपनाते हैं। शिल्पी माथुर प्रोफेशनल सिंगिंग से जुड़ी, लेकिन दीदी से इतना लगाव हो गया कि उन्हें अपनी बहन, गुरु मान कर आज सुबह गुरुजी से आशीर्वाद लेने आईं। ऐसी ही महाराज की सहज स्टाइल थी। मैं ये कहना चाहता हूँ कि **सीम्पलीसीटी इज़ धी पावर। गुरुजी ने यहाँ सीम्पलीसीटी में वेदांत, उपनिषद, वचनामृत का सार लिख कर दिया है।**

...जैसे सर जॉन मॅल्कम से महाराज मिले, वैसी ही अभी एक घटना बनी। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल **आनंदी बेन पटेल** को साहेबजी ने शालीन मानव रत्न एवार्ड

देने के लिए ब्रह्मज्योति बुलाया था। तो, उनका ऐसा संबंध बना कि उन्होंने साहेबजी को लखनऊ बुलाया और कहा कि आप मुझे महाराज के जन्मस्थान छपैया का दर्शन कराने के लिए ले जाओ। साहेबजी की उम्र भी 82 साल है। उनके लिये भी ट्रेवेलिंग वगैरह मुश्किल है। लेकिन, **अभी फरवरी महीने में साहेबजी उन्हें छपैया मंदिर का दर्शन कराने के लिए ले गये।** दर्शन करके उन्होंने धन्यता महसूस की और एक डिवोटी की तरह बन गईं। आज भी महाराज की वह परंपरा जारी है... बहुत सारे मंदिर, संस्थाएं और धर्मशालाएं हैं, लेकिन जो सच्चे दिल से-मुमुक्षुता से गुणातीत समाज में आता है, उसकी प्रकृति के ट्रांसफार्मेशन का काम और भगवान के समक्ष उसका भाव ग्रहण करके, भगवान में जोड़ने का काम हमारे यहाँ होता है। **स्वामीजी, साहेब दादा, गुरुजी, प्रेमस्वामीजी, बापुस्वामीजी, विज्ञानस्वामीजी, वीरेनभाई, इलेशभाई ये सब करते हैं...**

काकाजी कहते थे कि किसी भी सोल्युशन के लिए हमारे गुणातीत समाज में आओ... धुन करने से प्रॉब्लम कैसे सॉल्व होगी कि आपके अंदर कुछ नया आइडिया आएगा... गुरुजी को बहुत-बहुत धन्यवाद है कि सीम्पलीसीटी में जो बड़ी बातें करते हैं, वो क़ाबिले-तारीफ़ है। सोखड़ा से चरणरजस्वामी आए हैं। वे बहुत अच्छी पाग बांधते हैं। तो, गुरुजी ने उनसे कहा कि मेरी पाग बांधनी है। वे इतना ख़ुश हो गए कि पाग बांधते-बांधते उनकी आँखों में आँसू आ गये। उनकी चेतना को गुरुजी कितना छू गये। हमारे अश्विनभाई को काकाजी ने कहा था कि तू मेरे साथ मर्सडीज़ गाड़ी ड्राइव करना। काकाजी तो धाम में गये, लेकिन उनके मन में यह बात थी। एक बार गुरुजी मर्सडीज़ में जब पंजाब गए, तो साथ में गये अश्विनभाई से उन्होंने कहा कि तुम मेरी गाड़ी चलाओ। मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमारे महाराज प्रगट हैं, अखंड हैं और हमारे साथ साक्षात् हैं। ऐसे भाव में हम जीएं... यहाँ मंच पर और वहाँ आनंदी दीदी, माधुरी बहन व सब दिव्य बहनों द्वारा गैलेक्सी ऑफ स्पीरीच्युअल ब्राह्मीनाइज़्ड सेन्ट्स बैठे हैं। सर्व स्वरूपों ने हमें ये भेंट दी है। स्वामिनारायण भगवान को करोड़ों धन्यवाद हैं कि स्पीरीच्युआलिटी में जो कॉम्प्लेक्सीटी थी, वो सिम्पल करके दी व गुणातीतानंदस्वामी ने उसकी स्पीड बढ़ा दी और काकाजी पप्पाजी ने उसे सीम्पलीफाई करके हमें जो संत मार्ग दिखाया है, उस पर हम चलें। गुरुजी हैप्पी-हैप्पी बर्थडे, आपकी तबियत बहुत अच्छी रहे और आप बहुत आशीर्वाद देते ही रहें, देते रहें वही प्रार्थना...

डॉ. अनिल गुप्ताजी (गाजियाबाद)

...बहुत ही हर्ष का विषय है कि आज हम गुरुजी का प्रागट्योत्सव मना रहे हैं... एक अजीब संयोग हुआ, जो यहाँ आकर मैंने देखा। मैंने नीले रंग का

जो कुर्ता पहना है, वह एक साल से नहीं पहना था। दोपहर को मेरी पत्नी ने यह पहनने के लिये कहा और यहाँ आकर देखा कि संतों की सेवा में जो सेवक हैं, उनकी कमीज़ का रंग भी यही है। मुझे अचरज हुआ... संतों का आशीर्वाद हमेशा मिलता है... कोरोना काल में ये सब संतों-गुरुओं के आशीर्वाद से हम सब स्वस्थ्य खड़े हैं...

प.पू. गुरुजी

...हमारे स्वरूपों की मेहर से भरतभाई, रतिकाका, वशीभाई, वीरेनभाई, पीटर, बापुस्वामी, विज्ञानस्वामी, आचार्यस्वामी, सेवकस्वामी स्वयं आशीर्वादरूप बन गए हैं, तो नये कोई आशीर्वाद बरसाने की ज़रूरत ही नहीं रहती। हाँ, एक चीज़ है कि हमें इनकी हर बातों, चरित्रों, चेष्टा और आज्ञा का खुशी-खुशी स्वीकार व पालन करना है, ऐसा जीवन जीना है। तब ये सहज ही हम पर आशीर्वाद बरसा देंगे, कहना ही नहीं पड़ेगा। ऐसे आशीर्वाद हम पर बरसते हैं, उसकी निशानी क्या? तो, भीतर में शांति, ठंडक, आनंद रहे और शुभ-सत्य, **चेतनालक्षी** संकल्प उठे, हेतुलक्षी नहीं। मैं पहले भी कह चुका हूँ और आज भी कह रहा हूँ कि **हम मानव नहीं, महामानव हैं।** मानव का जीवन हेतुलक्षी होता है। महामानव का जीवन चैतसिक रहता है। चैतसिक का मतलब अक्षरब्रह्म में निमग्न रहता है। अर्थात् अक्षर की ओर जाने की झंखना-प्रयास में रहता है। ऐसे संत की गोद ढूंढ कर, उसमें बैठ कर अक्षरधाम की ओर गति करता है। महाराज ने करुणा करके ऐसी गोद हमें कांस्टेंट और कन्टीनुअस दी है। इन्हें पहचान कर मतलब–गेरुआ कपड़े पहने हुए कहीं भी मिल जाएंगे, लेकिन गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है कि भगवान जिनके अंदर अखंड प्रगट हैं, ऐसे सच्चे संत सबसे बड़े हैं। स्वामी की 9वें या 11वें प्रकरण की बातों में लिखा है कि धर्म, ज्ञान, वैराग्य आदि प्रकृष्ट हों, लेकिन इनमें यदि भगवान प्रगट न हों, तो कोई क़ीमत नहीं है, व्यर्थ है। जबकि यदि धर्म, ज्ञान, वैराग्य में कहीं खोखलापन नज़र आता हो, पर भगवान का संबंध पक्का रखा हुआ होगा, भगवान प्रगटाए हुए होंगे, तो वो विशिष्ट संत हैं। शास्त्रों में भी बताया कि सुधन्वा कितना ही धर्मवान था, लेकिन भगवान कृष्ण ने अर्जुन का पक्ष रखा। क्यों? क्योंकि सब कुछ गौण करके अर्जुन ने सिर्फ कृष्ण को ही मुख्य रखा था। तो, आज की सारी बातों का सार यही है कि **हमें ऐसे संतों की परंपरा में बिठाया हुआ है। इनकी गोद की महत्ता समझें। कभी भी किसी वज़ह से, किसी भी आकर्षण के कारण, किसी भी लालच में आ करके वो गोद छोड़ें नहीं। उसी में बैठे रहें, उससे चिपके रहें।** काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी–सभी परोक्ष और प्रगट गुणातीत स्वरूप हमें आशीर्वाद दें कि हमारी मति में कभी फ़र्क़ न पड़े। ऐसे संतों के तरफ सतत

नज़र करके ही जीएं। 'साधु पर्व' के लोगो पर लिखा है—मरज़ी में तेरी मिट जाएं। तो, मिटना कुछ नहीं होता है, देहभाव मिटता है और अक्षरभाव प्रगट हो जाता है। स्वाभाविक है कि अंधकार मिटने पर उजाला प्रगट हो जाता है। इसी तरह जैसे ही देहभाव टल जाता है, तो ब्रह्मभाव प्रगट हो जाता है। वो ब्रह्मभाव की प्रतीति हम पकड़े रखें, हमेशा उजाले में रहें—यही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई (पवई)

...आज गुरुजी के प्रागट्योत्सव पर **'साधु पर्व'** का ट्रेलर था। **'जब रात है ऐसी मतवाली, फिर सुबह का आलम क्या होगा...' 'साधु पर्व'** की बहुत ही अद्‌भुत शुरुआत हुई है। सेटेलाइट की डॅकोरेशन के रूप में 'साधु पर्व' मिशन हवा में तैरता दिखाया है... जी.पी.एस. सिस्टम से किसी को कहीं भी जाना हो, तो ईज़िली जा सकते हैं। गुरुजी ने हमारे लिए ऐसी व्यवस्था की है कि जिसे ऐसा साधु बनना है, वो जी.पी.एस. सिस्टम को फॉलो करके यानि मनमुखी छोड़ कर, गुरुमुखी जीवन जीकर ईज़िली साधुता प्राप्त कर सकता है। ऐसा अद्‌भुत मिशन आज से शुरू हो गया है।

...गुरुजी एकदम मेथोडिकल (व्यवस्थित) हैं, उनकी प्लानिंग परफेक्ट होती है।19-20 कहीं पर भी नहीं चलता है। इसलिए वे जो भी डिसाइड करते हैं, उसमें परफेक्टनेस होती है और वो सक्सेसफुल होता है... कोई सरप्राइज़ देना हो, तो कहीं भी लीकेज नहीं होनी चाहिए, वर्ना वह फ्लाप हो जाता है। 31 जनवरी को गुरुजी सरप्राईज़ में पवई आये। तो, किसी को भी पता नहीं चला कि इतना सारा क़ाफ़िला लेकर वे आ रहे हैं... रात को 9.30 बजे हमारी तो सभा चल रही थी कि तभी आकर हॉर्न बजे... इसके लिए गुरुजी को मैं सेल्युट करता हूँ।

कौन, कहाँ, कैसे बैठेगा? उसका भी पूरा नक्शा प्लानिंग परफेक्ट होता है। एक कुर्सी कम है, तो ख्याल देते हैं कि पहले से लाकर रख दो। ताकि यदि कोई आएगा, तो तकलीफ़ न हो। ऐसे बहुत सारे प्रसंग हैं, जिसमें परफेक्टनेस दिखती है। किचन में जो खाना बनता है, उसका टेस्ट भी गुरुजी ठीक से देखेंगे कि परफेक्ट हुआ है या नहीं। गुरुजी से आप सब लोग एक चीज़ सीखना कि **जो भी कार्य करो वो बेस्ट करो, रांध मत काटो।**

मंदिर में जो भी डेकोरेशन, काम हुआ है वो बेस्ट में बेस्ट है। इसलिए लोगों को मंदिर देखने का दिल होता है। किसी के साथ मिलना हो, बात करनी हो तो भी बेस्ट में बेस्ट। तो **पहली बात** हम लेकर जायें कि जो भी करो वो परफेक्ट करो।

दूसरी बात— दिल्ली-पंजाब वगैरह में इतना प्रचार-प्रसार हुआ है, वाह-वाह हो रही है। लेकिन उसके पीछे गुरुजी का 55 साल का परिश्रम है-तप है, जो

हमें दिखाई नहीं पड़ता है। हमने देखा है कि गुरुजी ऑटो रिक्शा या साइकिल रिक्शा में जाते। कोई भक्त यहाँ नहीं था, लेकिन काकाजी की आज्ञा थी कि दिल्ली में रहो। 6 महीने रहते थे और 2-5 भक्त आने शुरू होते कि तभी काकाजी-स्वामीजी गुजरात बुला लेते थे। फिर पूरा सामान लेकर गुजरात आते। गुजरात से 6 महीने के बाद दिल्ली आते, तो पहले बनाये भक्त आते नहीं थे, क्योंकि इतने समय यहाँ पर संत थे ही नहीं। सो, फिर नये सिरे से शुरुआत करते। इस प्रकार कितने साल तक किया। लेकिन पुराने भक्तों में आज भी हमारे नवीनभाई, जनार्दनभाई, पकई साहेब और नवल बा अनबिटन रहे... इसके पीछे गुरुजी की ज़हमत और धीरज बहुत है। हमारी तो धीरज ही नहीं रहती। जबकि गुरुजी 55 साल से इसी प्रकार रहे हैं... गुरुजी बताते हैं कि मंदिर में जब पहली साइकिल आई, तो हमने उसका महोत्सव मनाया, उसका पूजन किया था। कैसी परिस्थिति होगी? फिर साइकिल चोरी हो गयी, तो ऐसा शोक हुआ कि जैसे इकलौता लड़का मर गया। **गुरुजी ने जो सहन किया, वो सिर्फ काकाजी की तरफ दृष्टि रख कर, उन्हें राज़ी करने के लिए किया है।** प्रेमस्वामी बताते हैं कि दिल्ली भारत साधु समाज में रहने के लिए आये, तो ठंड में गुरुजी के लिये पानी गरम करने की सुविधा नहीं थी, तो लाइब्रेरी की पुस्तक जला कर पानी गर्म किया। **हम धीरज से तब रह सकते हैं, जब बड़े पुरुष का पक्का भरोसा होगा** और ऐसा भरोसा गुरुजी ने काकाजी और सभी स्वरूपों का किया है। वो हमने अनुभव किया है और देखा भी है।

...रियली गुरुजी का ये धीरज वाला बहुत बड़ा गुण है। किसी भी काम में हम लगे रहते हैं और जब परिणाम नहीं दिखता है, तो ऐसा होता है कि नहीं करना है। मगर काकाजी के वचन में गुरुजी को कितना भरोसा कि नहीं, हमें दिल्ली में ये कार्य करना है। काकाजी ने बताया था कि ये मेरा नहीं, ये तो योगीजी महाराज का काम है। योगीजी महाराज मुझे प्रेरणा करते हैं। सो, धीरज का इतना अच्छा परिणाम आया...

तीसरी बात—किसी भी परिस्थिति में भजन ज़्यादा करना। कोई तकलीफ़ या रोग आने पर यदि वह मिट नहीं रहा, तो डॉक्टर एक डोज़ ज़्यादा देंगे। इसी प्रकार गुरुजी ने आशीर्वाद दिया है कि यदि आपका काम नहीं हो रहा, तो डोज़ ज़्यादा लेना। क्या डोज़ लेनी, भजन की! भजन ज़्यादा करेंगे, तो काम होगा ही और ये तो स्वामिनारायण भगवान का वरदान है।

साथ ही हमेशा गुरुजी कहते हैं कि जीवन में पॉजिटिव थिंकिंग एप्लाई करनी है कि आनंद करो, भई आनंद करो। क्योंकि ऐसे प्रगट प्रभु और प्रगट संत मिले हैं। **हमें तो मुफ़्त मिले हैं, इसलिए वैल्यू मालूम नहीं है। सच, मुफ़्त में ऐसे गुणातीत संत मिलना बहुत बड़े भाग्य की बात है।** ये खाली याद रख कर हम साधु पर्व की

शुरुआत करते हैं। गुरुजी और सभी गुणातीत स्वरूपों और संतों के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि ये जो मिशन **साधु पर्व** है, वो जब आपका साधु पर्व मनाएं, तब तक हम कम्प्लीट हो जाएं और आपको अंतर में एकदम ठंडक हो जाए। **(आध्यात्मिक) जी.पी.एस. सिस्टम का सब यूज़ करते हो जाएं,** ऐसे गुरुजी और सब स्वरूप आशीर्वाद दें...

प.पू. रतिकाका (मोगरी)

...अनुपम मिशन का ऑफिस हमारे पंकजभाई हैंडल करते हैं और मिशन से जिसे जहाँ जाना हो, उनकी रेलवे या एयर बुकिंग वे करते हैं और किसी के आने पर उसके ठहरने की व्यवस्था इत्यादि भी वे ही करते हैं। तीन-चार साल पहले पंकजभाई के पास गुरुजी का फोन आया कि उत्सव में कौन-कौन आ रहे हैं? तू आ रहा है? पंकजभाई ने कहा कि गुरुजी, मैं अभी बुकिंग करा रहा हूँ, मेरे हाथ में लिस्ट है लेकिन उसमें मेरा नाम नहीं है। तब गुरुजी ने **उसे सूचन किया कि साधना मार्ग में तो साहेब, शांतिभाई, अश्विनभाई जैसे अपने बड़े जो कहें, वो ही करना है, मनमुखी नहीं करना है।** ये एडवाइज़-पाठ हम सबको सीखने की ज़रूरत है। **हमें भले कोई इच्छा हो, पर बड़े जो कहें-गुरुजन जो कहें, वो ही करने की ज़रूरत है।** ऐसा गुरुजी ने सुझाव दिया।

हम सब जानते हैं कि **गुरुजी के जीवन में माहात्म्य और सेवा दोनों ही अटूट है।** आज से लगभग 5 साल पहले मुझे यहाँ दिल्ली कम्प्यूटर सेंटर के संदर्भ में आना था। 2001 में मेरी बाईपास सर्जरी हुई थी। गुरुजी को मालूम था कि मैं तो ट्रेन से आया था। तो, आने के बाद गुरुजी ने मुझसे पूछा कि कब जा रहे हो? मैंने कहा—गुरुजी, परसों जा रहा हूँ, ट्रेन बुकिंग कन्फर्म है। गुरुजी बोले—ठीक है, पर दूसरे ही दिन मेरी फ्लाइट की टिकिट बुक करा दी और कहा कि आप फ्लाइट से जाओ। मैंने कहा गुरुजी ट्रेन की बुकिंग है। तो बोले—नहीं, उसमें चूहा दौड़ा-दौड़ करता है, उससे इन्फेक्शन होने का चांस रहता है, तो तकलीफ़ हो जाएगी। इन्फेक्शन से बचने के लिए आपको फ्लाइट में जाना है। ये महिमा और सेवा की बात जब हम सुनते हैं, तो गद्गद् हो जाते हैं।

आज सुबह हम सबने देखा कि पूजा में कैसा माहौल था। **हरेक भक्त पर गुरु शासन कर सके, ऐसा समाज गुरुजी ने तैयार किया है** और शिष्य अनहद आनंद पाते हैं। **बापा, काकाजी और पप्पाजी की कृपा से ऐसा समाज तैयार हो रहा है।** हमें भी मालूम है जैसा कि भरतभाई ने बताया कि यहाँ कैसी परिस्थिति थी। जब गुरुजी को पहली बार दिल्ली आने के लिए काकाजी ने आज्ञा की थी, तब

श्रीजी कॉलोनी की छत पर हम 10-15 युवक इकट्ठे हुए थे। काकाजी और पप्पाजी दोनों थे। वहाँ से हम सबने गुरुजी का विदाई समारोह किया था। साधु समाज की बिल्डिंग की जो बात की, तो तब कोई ख़बर पूछने भी आने वाला नहीं था। 4-6 महीने में सरदार पटेल यूनीवर्सीटी के वाइस चांसलर वी.एस. जब गर्वनमेंट के काम से यहाँ आते, तो संतों की खैर-ख़बर लेने आते। तब गुरुजी को ऐसा लगता कि हमारा कोई अपना आया। अब इतने भक्त गुरुजी से जुड़े हुए हैं, तो कितना आनंद होता होगा। बापा, काकाजी और पप्पाजी का कार्य कितना आगे बढ़ रहा है। यह देखकर हम सबको बहुत ख़ुशी होती है और आज हम प्रार्थना करते हैं कि हे स्वामीजी! हम जहाँ हैं, वहाँ हम बस साहेबजी को राज़ी कर सकें, आपकी तरह सेवा, भक्ति, समर्पण और प्रार्थना करके हमारा सबका जीवन ऐसा बने और सारा समाज सुखी हो सके ऐसा आशीर्वाद दो...

संतभगवंत साहेबजी

...प.पू. योगीजी महाराज और प.पू. काकाजी की ओर से दिल्लीवासियों को गुरुजी के रूप में बहुत बड़ी भेंट मिली है। योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी, महंतस्वामी के वे बहुत लाड़ले हैं। उनके साथ पूर्ण निर्दोषभाव से रहकर, सबको प्रभु का स्वरूप मानकर, उनकी आज्ञा में रहें। मानव देह में प्रभु ने गुरुजी को जो टैलेंट दिया, वो उन्होंने प्रभु की प्रसन्नता के लिए भक्ति में यूज़ किया। **प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करके वे गुणातीतभाव को पा गए और आज उनके द्वारा स्वामिनारायण भगवान हम सबको दर्शन व आशीर्वाद दे रहे हैं। ऐसा मानकर जो उनका दर्शन करेंगे, उनके साथ रहेंगे, उनकी आज्ञा का पालन करेंगे और उनके प्रति भाव रखेंगे, उन सबके जीवन में सुख-शांति-आनंद बढ़ जाएगा।** स्वामिनारायण भगवान का तो वरदान है कि हम सबको प्रारब्ध के दुःख में से बाहर निकाल कर, खाने-पीने, कपड़े-लत्ते का सुख दिया। लेकिन ऐसे साधु के मिलने से, **गुरुजी जैसे संत के प्रति आत्मबुद्धि-प्रीति होने से हमारा आख़िरी जन्म हो जाता है। तो, उनकी आज्ञा में रहकर निर्दोषभाव युक्त मन, कर्म, वचन से सेवा करने से उनकी प्रसन्नता प्राप्त होती है,** जिससे हमारा भीतर सुख, शांति से आनंदमय बन जाएगा। ये बहुत अद्‌भुत मौका मिला है कि हमें अच्छे मां-बाप के घर जन्म दिया, अच्छी सानुकूलता दी है और गुरुजी जैसे संत के प्रति आत्मबुद्धि-प्रीति हुई। दिल्ली जैसे स्थान में गुरुजी मिल गए, तो बहुत अच्छा मौका है। इसी देह में भगवान का सुख, शांति व आनंद लेना है। **मौका**

चूक न जाएँ, ऐसी जाग्रतता सबको रहे। गुरुजी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहे। गुरुजी के साथ जो संत हैं, वो भी बहुत अच्छे हैं। **आनंदी दीदी और संत बहनें भी बहुत अच्छा काम करती हैं। आनंदी दीदी भी काकाजी और गुरुजी की प्रसन्नता का पूर्ण पात्र है।** उनके द्वारा स्वामिनारायण भगवान, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और गुरुजी को राज़ी करने का भाव, प्रेम, समझदारी और निष्ठा दिल्ली मंडल में भी दिखाई देती है। ऐसी आनंदी दीदी का साथ है, गुरुजी की कृपा है और बहुत अच्छा मौका है, तो हम सब पर गुरुजी बहुत-बहुत प्रसन्न हैं। रतिभाई, भरतभाई, वशीभाई, सब संतों और आनंदी दीदी का हम सब पर आशीर्वाद बरसता रहे और गुरुजी को अंतर से हम राज़ी कर पाएँ, ऐसा हमारा जीवन बना रहे। प्रभु की प्रसन्नता के पात्र बनकर सुख-शांति-आनंद में हमारा जीवन व्यतीत हो। सबको तन-मन-धन और आत्मा से प्रभु खूब-खूब सुखी बनाये रखें—ऐसी प्रभुचरण, गुरुचरण में गुरुजी के प्रागट्य पर्व की हम सबकी प्रार्थना है...

(ध्वनिमुद्रण से संकलित)

चातुर्मास दौरान

[यानि दिनांक 10 जुलाई, रविवार (देवशयनी एकादशी) से 4 नवंबर, 2022 शुक्रवार(प्रबोधिनी एकादशी) तक]

भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु सभी सत्संगी निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि 29 जुलाई, शुक्रवार से 27 अगस्त, शनिवार तक एक बारी भोजन लें।
2. **चातुर्मास दौरान हर महीने या सिर्फ सावन के महीने में—**
   मंदिर के स्टाफ यानि 60 जनों के लिए एक दिन कॅश द्वारा भोजन की सेवा दें।
3. 10 जुलाई, रविवार -नियम की एकादशी, 19 अगस्त, शुक्रवार- जन्माष्टमी
   7 सितंबर, बुधवार-जलझीलनी एकादशी, 4 नवंबर, शुक्रवार - कार्तिक शुक्ला एकादशी इन चारों दिन व्रत रखें।
4. चातुर्मास दौरान यथाशक्ति **'महापूजा'** करवाएं।
5. रोज़ सुबह या सायं **'गुणातीत स्वरूपों'** की स्मृति सहित **पंद्रह मिनिट** कपालभाँति, अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका **प्राणायाम** करें।
6. चातुर्मास दौरान हमारे हिन्दी प्रकाशन 'ब्रह्मविद्या' एवं 'मंत्रशक्ति' पुस्तक का पारायण करते हुए उन बातों पर मनन-चितंन करें।
7. **सावन महीने के दौरान—**
   (क) 'बॅप्स' द्वारा प्रकाशित **'भगवान श्री स्वामिनारायण एक दिव्यजीवन गाथा'** के तीन पन्नों का नित्य पठन करते हुए पारायण करें।
   (ख) **'गुजराती'** भाषा जानते हों, वे **'स्वामी की बातें'** या हिन्दीभाषी मुक्त **'उपदेशामृत'** का पारायण करें।
   (ग) **'भगवत् कृपा'** के पिछले अंकों में आई संतों-मुक्तों की ज्ञानवार्ता का नियमित पठन करते हुए उस पर मनन-चिंतन करें।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 1.7.'22, शुक्रवार – रथयात्रा

(2) दि. 10.7.'22, रविवार – देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ

(3) दि.13.7.'22, बुधवार – गुरुपूर्णिमा

(4) दि. 24.7.'22, रविवार – एकादशी, व्रत

(5) दि. 26.7.'22, मंगलवार – ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का स्वधामगमन दिन

(6) दि. 29.7.'22, शुक्रवार – श्रावण मास प्रारंभ

(7) दि. 8.8.'22, सोमवार – पवित्रा एकादशी-व्रत (ठाकुरजी को रेशम के हार पहनाने।)

(8) दि.11.8.'22, गुरुवार – श्रावणी पूर्णिमा – रक्षाबंधन (राखी)

(9) दि. 15.8.'22, सोमवार – भारत स्वातंत्र्य दिन

(10) दि. 16.8.'22, मंगलवार – नागपंचमी

(11) दि. 17.8.'22, बुधवार – रांधण छठ (षष्ठी)

(12) दि. 18.8.'22, गुरुवार – शीतला सातम (सप्तमी)

(13) दि.19.8.'22, शुक्रवार – जन्माष्टमी-व्रत

(14) दि. 23.8.'22, मंगलवार – एकादशी, व्रत

(15) दि. 27.8.'22, शनिवार – श्रावण मास समाप्त

(16) दि.31.8.'22, बुधवार – गणेश चतुर्थी

(17) दि.1.9.'22, गुरुवार – गुरुहरि पप्पाजी महाराज का प्राकट्य दिन

(18) दि. 7.9.'22, बुधवार – जलझीलनी एकादशी-व्रत

(19) दि. 10.9.'22, शनिवार – गुरुहरि पप्पाजी महाराज का स्मृति पर्व

(20) दि. 12.9.'22, सोमवार – ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का स्मृति पर्व

(21) दि. 13.9.'22, मंगलवार – ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का स्मृति पर्व

(22) दि.19.9.'22, सोमवार – प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामीजी का प्रागट्योत्सव

(23) दि. 20.9.'22, मंगलवार – भगवान स्वामिनारायण
एवं ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज का स्मृति पर्व

(24) दि. 21.9.'22, बुधवार – एकादशी, व्रत
ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्मृति पर्व

(25) दि. 22.9.'22, गुरुवार – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी
एवं गुरुहरि काकाजी महाराज का स्मृति पर्व

(26) दि. 23.9.'22, शुक्रवार – अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का स्मृति पर्व

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052